संवाद पत्र

पूर्वोत्तर सीमा रेल (निर्माण संगठन)

54वाँ अंक

संरक्षक: श्री सुनील शर्मा,
महाप्रबंधक (निर्माण)

मुख्य संपादक : श्री संजय प्रसाद सिंह,
मुख्य राजभाषा अधिकारी/नि. एवं मुख्य इंजीनियर/निर्माण-8

उप मुख्य संपादक : श्री अभिजीत मजुमदार,
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी/निर्माण
एवं उप मुख्य इंजीनियर/निर्माण/अभिकल्प-2

संपादक : श्री राजेश रंजन कुमार,
राजभाषा अधिकारी/निर्माण

इस अंक में...

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ सं.	लेखक
1.	महाप्रबंधक (निर्माण) का संक्षिप्त परिचय	1	-
2.	महाप्रबंधक(निर्माण) का संदेश	2	श्री सुनील शर्मा, महाप्रबंधक(निर्माण)
3.	मुख्य संपादक की तूलिका से...	3	श्री संजय प्रसाद सिंह, मु.राजभाषा अधि./नि.
4.	उप मुख्य संपादक के डेस्क से...	4	श्री अभिजीत मजुमदार, उप मु.रा.भा.अधि./नि.
5.	संपादकीय...	5	श्री राजेश रंजन कुमार, राजभाषा अधिकारी/नि.
6.	महाप्रबंधक (निर्माण) द्वारा 72वाँ गणतंत्र दिवस मनाया जाना	6	-
7.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्चुअल बैठक	7	-
8.	क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति/निर्माण की वर्चुअल बैठक	8	-
9.	हिंदी कार्यशाला का आयोजन एवं वर्चुअल हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन	9-10	-
10.	महाप्रबंधक (निर्माण)/ पूर्वोत्तर सीमा रेल की उल्लेखनीय उपलब्धियाँ	11-12	-
11.	नैनो तकनीक	13	श्री कुलदीप तिवारी, सीनि.से.इंजी./नि./अभि.
12.	भाषाई आधार पर भारत "क", "ख", और "ग" क्षेत्र में विभाजित	14	-
13.	जिंदगी सजा भी मजा भी... (शायरी)	15	श्री मोनी कुमार वर्मा, सीनि.से.इंजी./नि./ड्राइंग
14.	योग दिवस की एक झलक : 21 जून, 2021	16-17	-
15.	संगठनात्मक प्रेरणा के लिए प्रभावी संप्रेषण की आवश्यकताएँ	18-19	श्री रीतु राज दास, सहा. कार्मिक अधि./नि.
16.	जिन्दगी (कविता)	20	श्री तपन चक्रवर्ती, सहा. कार्यपालक इंजी/नि./डि.

17.	राजभाषा हिंदी की विभिन्न पुरस्कार योजनाएँ एवं प्रदान की जाने वाली राशि में वृद्धि	21-22	-
18.	लम्हें (कविता)	23	श्री प्रसुन कुमार, सीनि. से.इंजी./नि./योजना
19.	माँ (कविता)	23	श्री हिमांशु कु० गुप्ता, सीनि.से.इंजी./नि./डिजा.
20.	कहानी एक भटकी हुई आत्मा की	24-25	श्रीमती बिन्दु कुमार, पत्नी रा.रं.कुमार,राधि/नि.
21.	जिन्दगी (कविता)	25	श्री प्रसुन कुमार, सीनि. से.इंजी./नि./योजना
22.	चिट्ठी के अन्दर (कविता)	26	श्री सुजय साहा, उप मु.बिजली इंजी./नि.
23.	तीर्थों का तीर्थ विष्णुपद मंदिर (गया)	27	श्री अरूण कुमार मिश्रा, सीनि.से.इंजी./नि./बिजली
24.	एक किरदार खोया हुआ (कविता)	28	श्री सुनील कु. सहगल, प्रमुख मु.सामग्री प्रबं./नि.
25.	जैसी करनी वैसी भरनी	29	सुश्री अनामिका मिश्रा, पुत्री श्री अरूण कु. मिश्रा
26.	12 “प्र” से किया जा सकता है राजभाषा हिंदी का समुचित विकास	30-34	डॉ. श्री सुमीत जैरथ, सचिव,गृह मंत्रालय(राभा)
27.	राक्षसेन्द्र रावण	35-36	श्री राजेश रंजन कुमार, राजभाषा अधिकारी/नि.
28.	माँ (कविता)	37	श्री राजकिशोर प्रसाद, वरि.लिपिक/बिजली/नि.
29.	रेलवे सुरंगों का संक्षिप्त विवरण	37-41	श्री मानस रंजन महापात्र सीनि.से.इंजी./नि./अभिकल्प
30.	सावधान! हर जगह साइबर ट्रैप	42	श्री शिवम कुमार, सुपुत्र श्री राजेश रंजन कु.,राधि/नि.
31.	राजभाषा पुरस्कार से संबंधित कुछ और जानकारी	43	-
32.	अंग्रेजी से भिन्न भाषाओं के शब्द और उनके हिंदी पर्याय	43	-

आओ ! हम सब मिल हिंदी को अपनाएँ, इसे आगे बढ़ाएँ, जीवन को खुशहाल बनाएँ, हिंदी में लिखें, हिंदी में पढ़ें, हिंदी से जुड़ें ।

- राधाकान्त भारती

महाप्रबंधक (निर्माण) का संक्षिप्त परिचय

श्री सुनील शर्मा ने 30 अक्टूबर, 2020 को पूर्वोत्तर सीमा रेल, निर्माण संगठन के महाप्रबंधक का पदभार संभाला है। इससे पहले आप स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय में संयुक्त सचिव के पद पर कार्यरत थे। आप 1984 बैच के भारतीय रेल कार्मिक सेवा (आईआरपीएस) अधिकारी हैं और वर्ष 1985 में भारतीय रेल सेवा से जुड़े। आपने दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदू कॉलेज से भौतिक विज्ञान (ऑनर्स) के साथ बैचलर ऑफ साइंस की डिग्री हासिल की। तत्पशचात्, दिल्ली विश्वविद्यालय से ही एम.बी.ए. की डिग्री हासिल की और फिर पंजाब विश्वविद्यालय से सामाजिक विज्ञान में एम.फिल. किया। आपका अलग-अलग मंत्रालयों और कई प्रमुख पदों पर तैनाती सहित एक शानदार कैरियर रहा है। पूर्व मध्य रेल के धनबाद मंडल में सहायक कार्मिक अधिकारी के रूप में आपकी आईआरपीएस की यात्रा शुरू हुई। तत्पश्चात्, आपने मुगलसराय मंडल में वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी का पदभार संभाला और उसके बाद सियालदह मंडल में भी रहे। इसके बाद आपने उत्तर रेल में वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी, दिल्ली के पद पर 3(तीन) वर्षों तक कार्य किया। इसके बाद दिल्ली विकास प्राधिकरण के आयुक्त (कार्मिक) के पद पर आपका चयन हुआ जहाँ आपने 5(पाँच) वर्षों तक कार्य किया। आपने, कार्यपालक निदेशक(ईआरपी), रेलवे बोर्ड, महाप्रबंधक/एचआरडी, रेलटेल और साथ ही, मंडल रेल प्रबंधक/आगरा सहित कई प्रमुख पदों पर कार्य किया है। आप स्वस्थ रहने पर विश्वास करते हैं और दशकों से योगाभ्यास कर रहे हैं। आप बैडमिंटन प्रतिस्पर्धा में हिंदू कॉलेज का प्रतिनिधित्व करने के साथ ही कॉलेज के दिनों में एक अच्छे खेल प्रेमी भी रहे हैं।

महाप्रबंधक (निर्माण) का संदेश

मेरे प्रिय साथियों,

अनेकों शुभकामनाएँ !

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि "संवाद-पत्र" का 54वाँ अंक ई-पत्रिका के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत है। निर्माण संगठन के राजभाषा विभाग की यह नवीन पहल है। कोरोना और लॉकडाउन जैसी विषम परिस्थितियों के बीच ही, आइए ! हम नए उत्साह एवं उमंग के साथ काम कर निर्माण संगठन को नई ऊँचाइयों तक लेकर चलें और इस प्रकार वर्ष 2021 को सार्थक एवं उपादेय बनाएँ। आप अपना अधिक से अधिक सरकारी कार्य हिंदी में करें और राजभाषा हिंदी को एक नई ऊँचाई दें। इसके लिए आइए ! निर्माण संगठन के हम सभी अधिकारी एवं कर्मचारीगण "ई-ऑफिस, एचआरएमएस एवं ई-पास" जैसे प्लैटफॉर्म पर किए जा रहे कार्य को हिंदी के माध्यम से करें ताकि नई तकनीक से इसे व्यावहारिक और सार्थक बनाकर एक उदाहरण प्रस्तुत किया जा सके। भाषाई आधार पर हम भले ही "ग" क्षेत्र में कार्यरत हैं, परन्तु कार्यालय के विभिन्न विषयों में हिंदी के प्रयोग से संबंधित निर्धारित वार्षिक लक्ष्यों को हमने पूरा कर लिया है और भाषा प्रशिक्षण जैसे कुछ ऐसे क्षेत्र हैं, जिनका लक्ष्य प्राप्त करने के लिए हम निरंतर प्रयासरत हैं। निर्माण संगठन के विभिन्न विभागों में कार्यरत सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आशा करता हूँ कि आप अपना कार्य अधिक से अधिक हिंदी में करेंगे ताकि राजभाषा संबंधी नियमों व निर्देशों का शत प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित किया जा सके। मैं एक बार पुन: इस नए वर्ष के उपलक्ष्य में निर्माण संगठन और आप सभी की सुख, समृद्धि, शांति और स्वास्थ्य की कामना करता हूँ।

जय हिंद !

SUNIL SHARMA
Digitally signed by SUNIL SHARMA
Date: 2021.08.10 17:23:50 +05'30'

(सुनील शर्मा)

महाप्रबंधक (निर्माण),

पू.सी.रेल, मालीगाँव

मुख्य संपादक की तूलिका से...

निर्माण संगठन द्वारा प्रकाशित ई-गृह पत्रिका संवाद पत्र आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यन्त गर्व की अनुभूति हो रही है। इस अंक को ई-पत्रिका का रूप प्रदान करने में राजभाषा अधिकारी/निर्माण ने अपना विशेष प्रयास किया है।

आज विश्व के हर क्षेत्रों में डिजिटलाइजेशन पर काफी बल दिया जा रहा है, ताकि हम विकास के पथ पर आगे बढ़ सकें। इसे क्रियान्वित करने के लिए डिजिटलाइजेशन की मुख्य बातों को हमें आम जनता के समक्ष राजभाषा हिंदी में प्रस्तुत करना अत्यधिक उपयोगी होगा। मुझे इस बात पर पूर्ण विश्वास है कि रेलवे के कामकाज के लिए डिजिटलाइजेशन के माध्यम से हिंदी के प्रयोग को आगे बढ़ाने में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का सहयोग प्राप्त होगा।मनुष्य अपने विचारों की अभिव्यक्ति किसी न किसी भाषा के माध्यम से कर सकता है। भाषा के अभाव में किसी सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय प्रगति की कल्पना नहीं की जा सकती। अत: निर्माण संगठन में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए भी अपने विचारों को व्यक्त करने हेतु "संवाद पत्र" नामक ई-पत्रिका के रूप में एक उचित मंच उपलब्ध है जिसके माध्यम से उन्हें अपनी बातों को हिंदी में व्यक्त करने की सुविधा है। इस ई-पत्रिका में निर्माण संगठन में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों की विभिन्न विधाओं से संबंधित हिंदी में रचनाएँ शामिल की गयीं हैं। आशा है, पाठकगण इस प्रयास से लाभान्वित हो पाएंगे। जैसा कि आप सभी अवगत हैं कि महाप्रबंधक (निर्माण) का कार्यालय "ग" क्षेत्र में स्थित है, ऐसे में यह ई-पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में सहयोग हेतु एक अच्छा माध्यम साबित हो सकता है।

मुझे विश्वास है कि इस ई-पत्रिका की सभी रचनाएँ आपको अवश्य पसंद आएंगी और पत्रिका अपना उद्येश्य प्राप्त करने में सफल होगी। अंत में, मैं निर्माण संगठन के सभी वरिष्ठ अधिकारियों से अनुरोध करता हूँ कि वे अपने दैनिक और सरकारी कामकाज में मूल रूप से हिंदी का प्रयोग करें ताकि कार्यालय के अन्य अधिकारियों और कर्मचारियों को भी अपना कार्य हिंदी में करने की प्रेरणा मिले। इस ई-पत्रिका में सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करने पर प्रोत्साहन स्वरूप प्रदान किए जाने वाले पुरस्कार संबंधी विवरण भी जानकारी स्वरूप उपलब्ध करायी गयी है। आशा है, सभी सुधी पाठकगण इसका लाभ अवश्य उठा पाएँगे।

शुभकामनाओं सहित!

SANJAY PRASAD SINGH
Digitally signed by SANJAY PRASAD SINGH
Date: 2021.08.06 11:41:25 +05'30'

(संजय प्रसाद सिंह)
मुख्य राजभाषा अधिकारी/निर्माण
एवं मुख्य इंजीनियर/निर्माण-8

उप मुख्य संपादक के डेस्क से...

"संवाद पत्र" के 54वें अंक का प्रकाशन का कार्य अत्यंत सराहनीय प्रयास है। यह हिंदी पत्रिका के प्रकाशन के क्षेत्र में एक नवीन कदम है। गृह मंत्रालय (राजभाषा विभाग) द्वारा दिए गए सुझाव को पूरा करते हुए निर्माण संगठन के गृह पत्रिका को ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशित किया जाना एक उत्तम प्रयास है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में यह एक ठोस कदम है क्योंकि यह प्रत्यक्ष रूप से वेबसाइट पर प्रस्तुत होगा जिसे सभी पाठकों को पढ़ने में सरल एवं सुलभ हो पाएगा। इससे कर्मचारियों को राजभाषा संबंधी जानकारियाँ प्राप्त होंगी तथा राजभाषा के प्रति झिझक कम होगी और कर्मचारियों को कार्यालय में राजभाषा में कार्य करने में सुविधा होगी। इससे कर्मचारियों के बीच हिंदी में कार्य करने में रूचि उत्पन्न होगी।

यह प्रयास अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न आलेख ज्ञानवर्धक होने के साथ-साथ उन अधिकारियों एवं कर्मचारियों को, जो हिंदी में लिखने में संकोच महसूस करते हैं, निश्चित ही, राजभाषा में साहित्य सृजन करने में प्रेरित करेंगे और मुझे विश्वास है कि आगामी अंकों में वे यथायोग्य सहयोग करेंगे। मुझे विश्वास है कि हमारी यह ई-पत्रिका विभिन्न प्रकार की रचनाओं के माध्यम से अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा के और अधिक समीप लाने में कारगर साबित होगी और कार्यालय में राजभाषा के प्रति प्रेरक और सहायक वातावरण बनाएगी।

शुभकामनाओं सहित!

AVIJIT MAJUMDER

Digitally signed by AVIJIT MAJUMDER
Date: 2021.08.06 10:29:56 +05'30'

(अभिजीत मजुमदार)
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी/निर्माण एवं
उप मुख्य इंजीनियर/निर्माण/अभिकल्प-2

“संवाद-पत्र”

संपादकीय...

पूर्वोत्तर सीमा रेल/निर्माण संगठन, मालीगाँव का राजभाषा विभाग “संवाद-पत्र” के 54वें अंक की गृह “ई-पत्रिका” का प्रथम प्रकाशन प्रारंभ करने जा रहा है। यह एक प्रारंभिक प्रयास है, जिसमें अनेकों सुधारयोग्य संभावनाएँ हो सकती हैं। आजकल सोशल मीडिया, इलेक्ट्रोनिक मीडिया जैसे- वाट्सैप, फेसबुक, इंस्ट्राग्राम, कू, ट्वीटर इत्यादि का खूब प्रचलन हो गया है, जिसका हमारे मन-मस्तिस्क पर सीधा असर पड़ता है। अब प्रत्येक विषय सामग्री सीधे वेबसाइट पर देखना अत्यंत सुलभ एवं सरल प्रतीत हो गया है। कोविड महामारी में लॉकडाउन के दौरान गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग का यह सुझाव रहा है कि समय के अनुसार अपने कार्य की प्रकृति में बदलाव लाते हुए गृह पत्रिका को अब ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशित किया जाए। इसी सुझाव को ध्यान में रखते हुए एकत्रित सामग्रियों को ई-पत्रिका के अंतर्गत शामिल किया गया है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए ई-पत्रिका एक सशक्त माध्यम के रूप में साबित हो पाएगा, ऐसी आशा है। इस ई-पत्रिका में हमने अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा विभिन्न विधाओं पर रचित सामग्री समाहित करने का प्रयास किया है। इस ई-पत्रिका में सुरंग निर्माण से संबंधित जानकारी के अलावा नैनो तकनीक, साइबर ट्रैप तथा गृह मंत्रालय के माननीय सचिव श्री सुमीत जैरथ जी के 12 “प्र” जैसी महत्वपूर्ण जानकारी के अलावा संगठनात्मक प्रेरणा संबंधी जानकारी उपलब्ध करायी गयी है, जो अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी। मुझे विश्वास है कि इस ई-पत्रिका के प्रकाशन से निर्माण संगठन में राजभाषा के प्रचार-प्रसार को अवश्य ही बल मिलेगा। साथ ही, सभी सुधी पाठकों से मेरा विनम्र निवेदन होगा कि अगले अंक को प्रकाशित करने में आप सबकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होने वाली है अर्थात् आपके महत्वपूर्ण योगदान की अपेक्षा रहेगी। अंत में, मैं पत्रिका के सभी लेखकों के प्रति अपनी आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके सहयोग से ही यह संभव हो पाया है।

आपके महत्वपूर्ण सुझावों की अपेक्षा सहित...

सादर,

Rajesh Ranjan Kumar
Digitally signed by Rajesh Ranjan Kumar
Date: 2021.08.05 20:09:03 +05'30'

(राजेश रंजन कुमार)
राजभाषा अधिकारी/निर्माण

महाप्रबंधक (निर्माण) द्वारा 72वाँ गणतंत्र दिवस मनाया जाना

महाप्रबंधक(निर्माण) श्री सुनील शर्मा ने 26 जनवरी, 2021 को 72वें गणतंत्र दिवस के शुभअवसर पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया। इस अवसर पर निर्माण संगठन के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे। महाप्रबंधक (निर्माण) ने इस अवसर पर अपना संबोधन प्रस्तुत करते हुए निर्माण संगठन में कार्यरत सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों तथा उनके परिवार के सदस्यों को शुभकामनाएँ व्यक्त की। उन्होंने कहा कि भारतीय रेल ने देशव्यापी मजबूत परिवहन, अवसंरचना की स्थापना और उन्नयन करके देश की निरंतर वृद्धि में योगदान देने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी को सफलतापूर्वक निभाया है। पूरे पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए एक कुशल और भरोसेमंद रेल नेटवर्क प्रदान करना हमारी अत्यंत महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि कोविड-19 जैसे वैश्विक महामारी के प्रतिकूल परिस्थिति के बावजूद पूर्वोत्तर सीमा रेल निर्माण संगठन के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने देश सेवा करने के सर्वोत्तम तरीके से अपने कर्तव्यों का निर्वहन किया है। उन्होंने पूर्वोत्तर क्षेत्र में स्थित विभिन्न राज्यों में रेल नेटवर्क के विस्तार से संबंधित विस्तृत व्यौरा प्रस्तुत किया। इसके अलावा, पड़ोसी देशों के साथ अंतर्राष्ट्रीय सहयोग बढ़ाने के लिए ट्रांस-एशियन रेलवे नेटवर्क की स्थापना हेतु कई अंतर्राष्ट्रीय कनेक्टिविटी परियोजनाओं को क्रियान्वित करने के विषय में जानकारी दी, जिसमें बांगलादेश एवं नेपाल शामिल है। अंत में, उन्होंने उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपील की कि आगे की चुनौतियों का जोश, समर्पण एवं प्रतिबद्धतापूर्वक सामना करें।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्चुअल बैठक

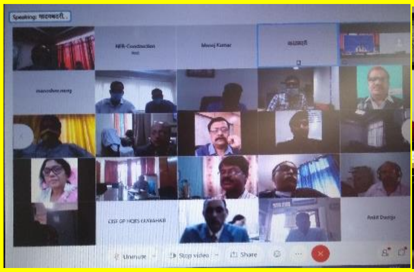

1. श्री सुनील शर्मा, महाप्रबंधक (निर्माण) एवं अध्यक्ष, नराकास-2 की अध्यक्षता में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, केंद्रीय कार्यालय-2, गुवाहाटी की बैठक 25 फरवरी, 2021 को 11.30 बजे वर्चुअल रूप से आयोजित की गई।
2. बैठक में कुल 58 (अंठावन) सदस्यों में से 44 (चवालीस) सदस्य उपस्थित थे।
3. बैठक का शुभारंभ श्री संजय प्रसाद सिंह, मुख्य इंजीनियर/नि.- 8 एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी/निर्माण ने उपस्थित सदस्यों का स्वागत करते हुए किया। श्री सिंह ने कहा कि पूर्वोत्तर सीमा रेल, निर्माण संगठन, मालीगाँव की अध्यक्षता में होने वाली यह 11वीं बैठक है और यह बैठक निर्धारित समय-सीमा के अंतराल पर आयोजित की जा रही है।
4. अध्यक्ष नराकास-2 ने राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3), हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर, संगठनीय/विभागीय राजभाषा बैठकें, हिंदी प्रशिक्षण एवं कंप्यूटरों के द्विभाषीकरण जैसे महत्वपूर्ण मदों पर सभी सदस्य कार्यालय को विशेष रूप से ध्यान देने तथा इन मदों में कमियों को दूर करके पर्याप्त सुधार लाने का सुझाव दिया।
5. अध्यक्ष ने कहा कि सभी सदस्य कार्यालय नियमानुसार वर्ष में कुल 4 (चार) विभागीय राजभाषा बैठकें आयोजित करें और जिन सदस्य कार्यालयों में अब तक एक भी विभागीय बैठकें आयोजित नहीं की गई हैं वे सदस्य मार्च, 2021 तक अवश्य आयोजित कर लें।
6. अध्यक्ष ने सभी सदस्य कार्यालयों से अनुरोध किया कि वे अपने कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा की नितियों एवं प्रोत्साहन योजनाओं से अवगत कराएँ और उन्हें विभिन्न गतिविधियों में शामिल होने के लिए प्रेरित व प्रोत्साहित करें।
7. अध्यक्ष ने उपस्थित सदस्यों को सुझाव दिया कि हिंदी प्रशिक्षण के लिए अधिकारियों एवं कर्मचारियों को योजनाबद्ध कार्यक्रम बनाकर प्रत्येक प्रशिक्षण सत्र में प्रशिक्षित करवाने के लिए आवश्यक कदम उठाएँ।
8. गृह मंत्रालय,राजभाषा विभाग के श्री बदरी यादव, सहायक निदेशक/कार्यान्वयन ने अध्यक्ष, नराकास-2 की पूरी टीम को बधाई देते हुए कहा कि निर्माण संगठन के नेतृत्व में नराकास-2 के अंतर्गत हिंदी में बहुत ही सराहनीय कार्य हो रहा है। इस मौके पर श्री यादव ने डॉ.सुमीत जैरथ, सचिव (राजभाषा), गृह मंत्रालय के द्वारा लिखे गए “12 प्र” बीज लेख के बारे में विस्तार से बताया और सभा सदस्यों से इस लेख का लाभ उठाने का आग्रह किया।
9. इस बैठक की संपूर्ण कार्यवाही का संचालन श्री राजेश रंजन कुमार, राजभाषा अधिकारी/निर्माण ने किया तथा सदस्य कार्यालयों से प्राप्त छमाही प्रगति रिपोर्ट संबंधी पावर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण दिया, जिस पर विभागवार रूप से कुल आठ मदों पर राजभाषा की उपलब्धियों एवं आंकडों की समीक्षा की गई और अंत में उन्होंने धन्यवाद प्रस्ताव भी प्रस्तुत किया।

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्चुअल बैठक

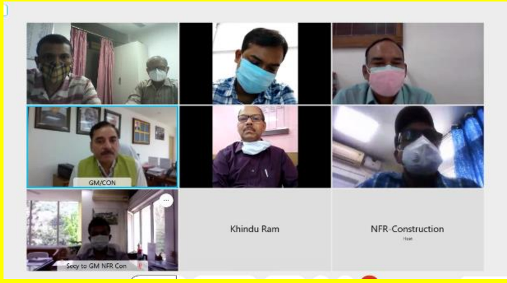

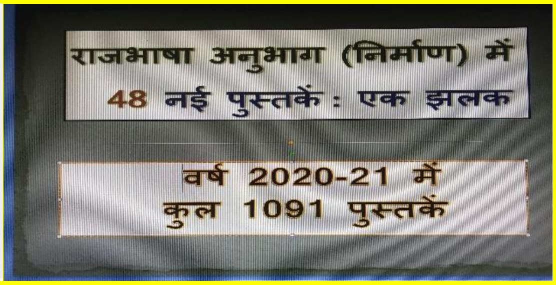

1. **श्री सुनील शर्मा, महाप्रबंधक (निर्माण), पूर्वोत्तर सीमा रेल की अध्यक्षता मे क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्चुअल बैठक दिनांक: 28.04.2021 को आयोजित की गई। इस बैठक में महाप्रबंधक/निर्माण एवं अध्यक्ष ने कहा कि संविधान द्वारा प्रदत्त राजभाषा की नीतियों का गंभीरता से अनुपालन करते हुए बेहतर परिणाम दिखाने की आवश्यकता है।**
2. **अध्यक्ष ने कहा कि 1 अप्रैल, 2021 से राजभाषा के नए वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं, जिन्हें प्राप्त करने के लिए हरसंभव प्रयास करना होगा।**
3. **इस मौके पर अध्यक्ष ने सभी विभागाध्यक्षों से अनुरोध किया कि वे अपने कार्य क्षेत्र के उन स्थलों को चिन्हित करें, जहाँ राजभाषा के प्रचार-प्रसार में कमी आ रही है और उन कमियों को शीघ्र दूर करने का प्रयास करें।**
4. **उन्होंने कहा कि सभी विभागाध्यक्ष अपने विभागों में हिंदी के प्रचार-प्रसार को व्यापक स्तर पर बढ़ाने के लिए हिंदी के प्राप्त पत्रों के उत्तर, हिंदी में मूल पत्राचार, टिप्पणी एवं डिक्टेशन के मदों में राजभाषा की नीतियों के अनुरूप गंभीरता से अनुपालन सुनिश्चित करवाएँ।**
5. **अध्यक्ष ने यह भी कहा कि राजभाषा के संदर्भ में वर्तमान समय में आ रहे तकनीकी क्षेत्रों यथा ई-ऑफिस में नोटिंग, एचआरएमएस और ई-पास आदि में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयास जारी रखने की आवश्यकता है।**
6. **इस बैठक का शुभारंभ श्री संजय प्रसाद सिंह, मुख्य इंजीनियर/ निर्माण - 8 एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी/ निर्माण ने सदस्यों का स्वागत करते हुए किया।**
7. **इस बैठक में तिमाही प्रगति रिपोर्ट संबंधी पावर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण श्री सुब्रत ज्योति मंडल, उप मुख्य राजभाषा अधिकारी/निर्माण ने किया।**
8. **इस बैठक के दूसरे भाग में श्री राजेश रंजन कुमार, राजभाषा अधिकारी/निर्माण ने वर्ष 2020-21 के लिए नए खरीदे गए हिंदी पुस्तकों की सूची वर्चुअल रूप में प्रस्तुत किया और सभी उपस्थित सदस्यों से अनुरोध किया कि अपनी रूचि के अनुसार इन हिंदी पुस्तकों का लाभ उठाएँ।**
9. **इस बैठक में मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण 1, 2 एवं 3 सहित सभी विभागाध्यक्ष एवं वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित थे।**
10. **इस वर्चुअल बैठक का संचालन और धन्यवाद ज्ञापन श्री राजेश रंजन कुमार, राजभाषा अधिकारी/ निर्माण ने किया।**

हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन

जनवरी-मार्च, 2021 के दौरान 22.03.2021 से 26.03.2021 तक 5 (पाँच) दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला के दौरान गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की हिंदी प्राध्यापिका श्रीमती शर्मिला ताये ने हिंदी व्याकरण एवं मुख्यालय, मालीगाँव राजभाषा विभाग के श्री सहदेव सिंह पुरती, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी ने राजभाषा नीति विषय पर व्याख्यान दिया। इसी कार्यशाला में राजभाषा के प्रचार-प्रसार को ई-ऑफिस प्लैटफॉर्म पर बढ़ाने के उद्देश्य से एचआरएमएस, ई-ऑफिस और ई-पास जैसे विषयों पर व्याख्यान देने के लिए सुश्री प्रतिभा सिंहा, सहायक कार्मिक अधिकारी/मुख्यालय, मालीगाँव को आमंत्रित किया गया था। इस मौके पर सुश्री सिंहा ने विभागों में एचआरएमएस के कार्यान्वयन और ई-पास की निकासी सहित ऑनलाइन टिकट बुकिंग और निरसीकरण बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस कार्यशाला में निर्माण संगठन मुख्यालय के अधीन विभिन्न विभागों से कुल 26 (छब्बीस) कर्मचारीगण शामिल हुए ।

वर्चुअल हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन

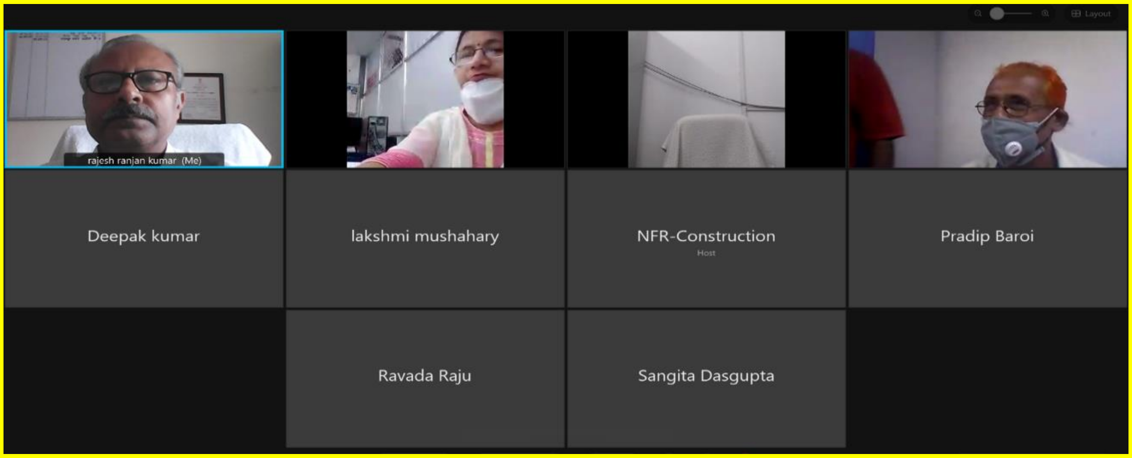

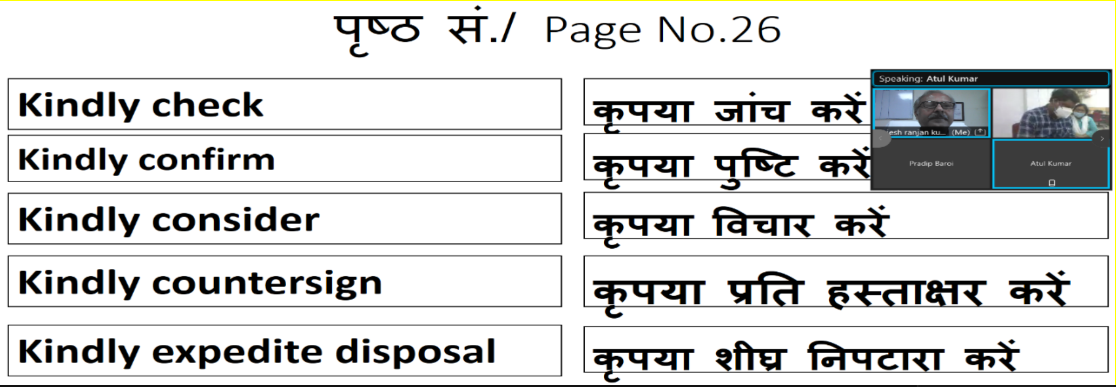

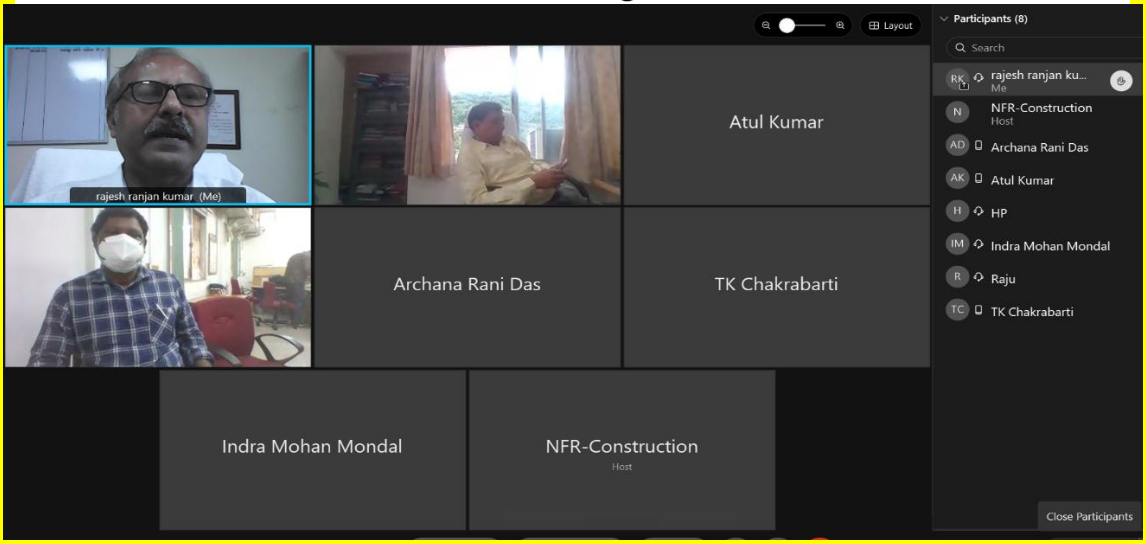

अप्रैल-जून 2021 तिमाही की वर्चुअल हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह 3(तीन) दिवसीय हिन्दी कार्यशाला दिनांक : 28.06.2021, 29.06.2021 एवं 30.06.2021 को आयोजित की गई। इन तीन दिनों की हिन्दी कार्यशाला में निर्माण संगठन के विभिन्न विभागों से कुल 4(चार) अधिकारी एवं 25 (पच्चीस) कर्मचारी उपस्थित हुए। इस 3(तीन) दिवसीय हिंदी कार्यशाला में हिंदी की तिमाही प्रगति रिपोर्ट के प्रत्येक मदों पर विस्तृत रूप से चर्चा हुई तथा टिप्पणियों के प्रायोगिक प्रयोग पर चर्चा की गयी।

महाप्रबंधक (निर्माण) / पूर्वोत्तर सीमा रेल की उल्लेखनीय उपलब्धियाँ

1. वर्ष 2021-21 में हल्दीबाड़ी-जीरो प्वाइंट (अंतर्राष्ट्रीय) 3.72 कि.मी. लम्बी नई लाइन - इस परियोजना की कुल लागत 68.34 करोड़ रूपए है। रेल संरक्षा आयुक्त ने इस परियोजना को दिनांक: 05.01.2021 को प्राधिकृत किया था।
2. वर्ष 2020-21 में डिगारू-जागीरोड 23.52 कि.मी. लम्बी दोहरीकरण परियोजना की कुल लागत 1873.21 करोड़ रूपए है। रेल संरक्षा आयुक्त ने इस परियोजना को दिनांक: 03.10.2020 को प्राधिकृत किया था।
3. वर्ष 2020-21 में माजगाँव-अभयापुरी 23.52 कि.मी. लम्बी दोहरीकरण परियोजना की कुल लागत 2950.00 करोड़ रूपए है। रेल संरक्षा आयुक्त ने इस परियोजना को दिनांक: 28.11.2020 को प्राधिकृत किया था।
4. वर्ष 2020-21 में कामपुर-होजाई 27.50 कि.मी. लम्बी दोहरीकरण परियोजना की कुल लागत 1873.21 करोड़ रूपए है। रेल संरक्षा आयुक्त ने इस परियोजना को दिनांक: 26.02.2021 को प्राधिकृत किया था। उन्होंने नवनिर्मित ट्रैक पर 100 कि.मी. प्रति घंटे की सेक्शन गति प्राधिकृत की है।
5. वर्ष 2020-21 में, कोविड महामारी के बावजूद सभी परियोजनाओं में उल्लेखनीय प्रगति हासिल की व बजट राशि से अधिक (बजट का 107 प्रतिशत) की वित्तीय प्रगति की गयी।
6. न्यू बंगाईगाँव-गोवालपारा-कामाख्या 176 कि.मी. लम्बी दोहरीकरण परियोजना के अंतर्गत कामाख्या-जोगीघोपा सेक्शन के चालू कार्य का दिनांक: 22.03.2021 को विंडो ट्रेलिंग निरीक्षण किया गया।
7. नागालैण्ड के माननीय मुख्यमंत्री एवं मुख्य सचिव के साथ कोहिमा में दिनांक: 28.01.2021 को एक बैठक आयोजित की गयी।
8. शिलांग में दिनांक: 23.01.2021 एवं 24.01.2021 को आयोजित नॉर्थ इस्ट कॉंसिल की 69वीं पूर्ण बैठक में महाप्रबंधक/निर्माण ने भाग लिया व सभा को महत्वपूर्ण "कैपिटल कनेक्टिविटी परियोजना" में की गयी प्रगति की जानकारी दी।
9. रेलवे बोर्ड, नई दिल्ली में दिनांक: 08.01.2021 एवं 09.01.2021 को अधिकारियों के साथ बैठक हुई।
10. जिरीबाम-इंफाल नई लाइन परियोजना का दिनांक:31.01.2021 को निरीक्षण किया गया।
11. माननीय रेल मंत्री के साथ दिनांक: 10.02.2021 को विडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से एक परफॉर्मेंस समीक्षा बैठक आयोजित की गयी, जिसमें पूर्वोत्तर सीमा रेल की चालू परियोजनाओं की कमीशनिंग की प्रगति और योजना पर चर्चा की गई।
12. नागालैण्ड के माननीय राज्यपाल के साथ डिमापुर (धनसिरी)-जुब्बा नई लाइन परियोजना की प्रगति की समीक्षा के लिए दिनांक: 23.02.2021 को कोहिमा में एक बैठक आयोजित की गयी।
13. दिनांक: 13.02.2021 को तुपुल-इंफाल नई लाइन परियोजना के निरीक्षण के दौरान रेलवे बोर्ड के सदस्य, आधारभूत संरचना (एम आई) के साथ महाप्रबंधक/निर्माण शामिल रहे।
14. दिनांक: 15.02.2021 को डिमापुर-कोहिमा नई लाइन परियोजना के निरीक्षण के दौरान रेलवे बोर्ड के सदस्य, आधारभूत संरचना (एम आई) के साथ महाप्रबंधक/निर्माण शामिल रहे।

15. दिनांक: 09.02.2021 को डिगारू-होजाई एवं होजाई-लामडिंग दोहरीकरण परियोजना और दिनांक: 09.02.2021 को लामडिंग-हाफलॉग सेक्शन का निरीक्षण किया गया।
16. रेलवे बोर्ड, नई दिल्ली में दिनांक: 26.02.2021 को अधिकारियों के साथ बैठक हुई।
17. निश्चिंतपुर यार्ड से बांगलादेश सीमा तक रेलपथ बनाने का कार्य पूरा हो चुका है। बांगलादेश की ओर से भारत सीमा तक रेलपथ जोड़ने का कार्य पूरा होने के बाद निश्चिंतपुर यार्ड चालू हो जाएगा। यह कार्य बांगलादेश सरकार की देखरेख में प्रगति पर है और इस साल तक पूरी होने की उम्मीद है।
18. अरूणाचल प्रदेश के माननीय मुख्य मंत्री के साथ दिनांक:08.03.2021 को अरूणाचल प्रदेश राज्य के विभिन्न परियोजनाओं के बारे में इटानगर में एक बैठक आयोजित की गयी।
19. पूर्वोत्तर सीमा रेल (निर्माण) की महत्वपूर्ण परियोजनाओं की प्रगति सहित पूर्वोत्तर क्षेत्र की सभी राजधानियों को रेल मार्ग से जोड़ने संबंधी परियोजनाओं के बारे में रेलवे बोर्ड में दिनांक: 13.03.2021 को आयोजित समीक्षा बैठक में अध्यक्ष सह मुख्य कार्यपालक अधिकारी, रेलवे बोर्ड को अवगत कराय गया।
20. न्यू बंगाईगाँव-गोवालपारा-कामाख्या दोहरीकरण परियोजना के अंतर्गत कामाख्या - जोगीघोपा सेक्शन के चालू कार्यों का दिनांक : 22.03.2021 को विंडो ट्रेलिंग निरीक्षण किया गया।
21. न्यू जलपाईगुड़ी में कार्यों की प्रगति की समीक्षा बैठक आयोजित की गई और दिनांक: 25.03.2021 को सेवक-रंगपो नई लाइन परियोजना का निरीक्षण किया गया।
22. सिक्किम के अपर मुख्य सचिव (योजना व वित्त) के साथ दिनांक: 26.03.2021 को एक बैठक आयोजित की गई और सेवक-रंगपो कैपिटल कनेक्टिविटी परियोजना से संबंधित ऐसे मुद्दों जिनका समाधान राज्य सरकार द्वारा अपेक्षित है, पर प्रकाश डाला गया और शीघ्र समाधान के लिए अनुरोध किया गया।
23. डिगारू-होजाई दोहरीकरण रेल परियोजना एवं लामडिंग (पाथरखोला बाईपास) - हाफलॉग आमान परिवर्तन सेक्शन का दिनांक: 03.04.2021 को विंडो ट्रेलिंग निरीक्षण किया गया।
24. सेना के अधिकारियों के साथ भालुकपोंग-तवांग नई लाइन के सिलसिले में दिनांक: 08.04.2021 को अरूणाचल प्रदेश के टैगा में एक बैठक आयोजित की गई।
25. अरूणाचल प्रदेश के भालुकपोंग-तवांग नई लाइन के फाइनल लोकेशन सर्वे के सिलसिले में दिनांक: 10.04.2021 को निरीक्षण किया गया।
26. जुगीजान स्टेशन (बड़ी लाइन) के स्टेशन संचालन नियम (एसडब्ल्यूआर) SWR का 108 (एक सौ आठ) पृष्ठों का हिंदी अनुवाद, टंकण एवं विधीक्षा कर परिचालन विभाग को सुपुर्द किया गया।
27. (क) तेतेलिया एस.टी./22, (ख) तेतेलिया एस.टी./23, (ग) डिगारू एस.टी./21, (घ) खेत्री बड़ी लाइन-ए एस.टी.24/ए, (ड.) बराहू बड़ी लाइन-ए एस.टी./26, (च) बराहू बड़ी लाइन-ए1 एस.टी./25, (छ) जमुनामुख एस.टी./38, (ज) जुगीजान एस.टी./39, तथा (झ) कामपुर एस.टी./35, 36, 37, 37-ए फाटक संचालन अनुदेश (जीडब्ल्यूआई) GWI का हिंदी अनुवाद, टंकण एवं विधीक्षा कर परिचालन विभाग को सुपुर्द किया गया।

नैनो तकनीक

- *श्री कुलदीप तिवारी,*
सीनियर सेक्शन इंजीनियर(अभिकल्प)/निर्माण

नैनो तकनीक दो शब्दों – **"नैनो और तकनीक"** से बना है, जहां नैनो का शाब्दिक अर्थ है – बौना। इस प्रकार नैनो तकनीक का सामान्य अर्थ हुआ सूक्ष्म तकनीक। वास्तव में नैनों तकनीक ऐसा प्रायोगिक विज्ञान है, जिसमें 100 नैनोमीटर से भी छोटे कण प्रयोग में लाए जाते हैं। इस तकनीक में प्रयोग किए जाने वाले पदार्थ नैनो मटेरियल्स कहलाते हैं। इस अत्याधुनिक तकनीक ने विज्ञान जगत में क्रांति ला दी है। आज भवन निर्माण सामग्री, वस्त्र उद्योग, घरेलू उपकरण, वैज्ञानिक उपकरण, खाद्य, कागज और पैकिंग उद्योग, कॉस्मेटिक्स, अन्तरिक्ष विज्ञान, कम्प्यूटर, सूचना प्रौद्योगिकी के साथ-साथ अनुसंधान एवं विकास जैसे क्षेत्रों में नैनो तकनीक का उपयोग किया जा रहा है।

नैनो तकनीक का विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग

नैनो तकनीक के समक्ष वर्तमान में अनेक चुनौतियाँ होने के बावजूद भी इसका उपयोग सीमित स्तर पर अनेक क्षेत्रों में किया जा रहा है। इसकी असीमित संभावनाओं को देखते हुए नैनो तकनीक को सपनों का विज्ञान भी कहा जाता है।

नैनो तकनीक का रेल जगत के क्षेत्र में उपयोग

(क) नैनो तकनीक का प्रयोग करते हुए हल्के तथा मजबूत रेल वाहनों का निर्माण किया जा सकता है। उदाहरणस्वरूप – ग्रिफिन का उपयोग करते हुए रेल वाहनों के इंजन का निर्माण किया जा सकता है जिससे उसकी दक्षता ज्यादा होगी।

(ख) नैनो फिल्टर का प्रयोग करके रेल वाहनों के द्वारा पर्यावरण के प्रदूषण को कम किया जा सकता है।

(ग) उर्जा के क्षेत्रों में भी नैनो तकनीक अत्यधिक उपयोगी साबित हो सकती है। उर्जा के उत्पादन, भण्डारण और संरक्षण तीनों ही क्षेत्रों में नैनो तकनीक का प्रयोग वर्तमान में किया जा रहा है। जैसे- सामान्य फोटोवाल्टिक सेल और विकिरण के केवल 15% भाग को विद्युत में परिवर्तन कर पाते है परंतु नैनो वाल्टिक सेल सौर विकिरणों के 50% भाग को विद्युद में परिवर्तन करने में सक्षम है। अत: नैनो वाल्टिक सेलों का इस्तेमाल कर हम रेल वाहनों की क्षमता को और भी बढ़ा सकते हैं। इसके अलावा नैनो तकनीक एवं बायो नैनो जेनरेटर का भी विकास किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त नैनो तकनीक का प्रयोग संचार तकनीक, चिकित्सा के क्षेत्र, पर्यावरणीय क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र, कृषि क्षेत्र एवं रक्षा के क्षेत्र में भी किया जा रहा है।

भाषाई आधार पर भारत “क”, “ख”, और “ग” क्षेत्र में विभाजित

राजभाषा नियम 1976

हिंदी के अनुमानित ज्ञान के आधार पर देश के राज्यों संघ शासित प्रदेशों को तीन क्षेत्रों, यथा “क” “ख” और “ग” में पारिभाषित किया गया है।

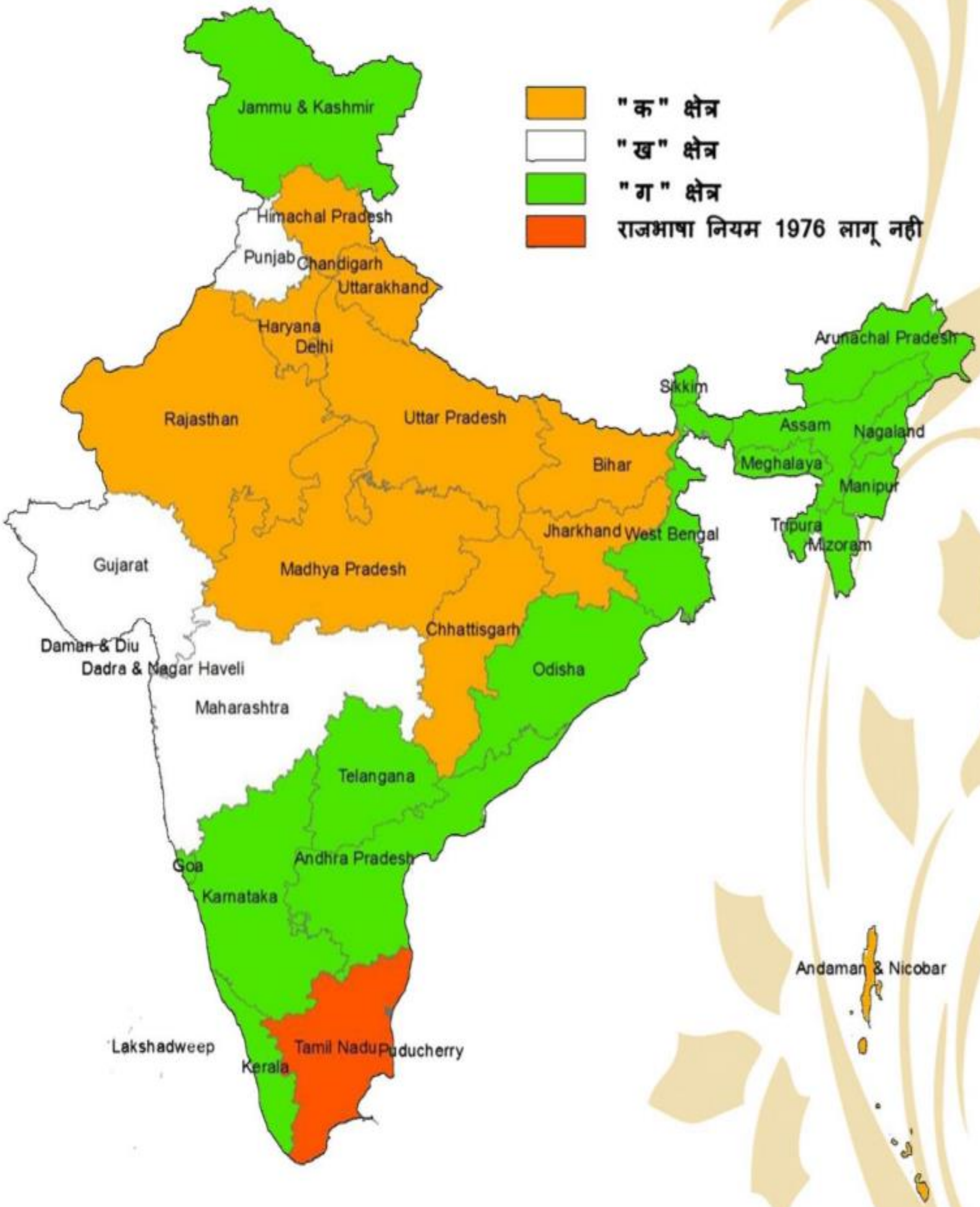

- "जिंदगी सजा भी, मजा भी" -

- श्री मोनी कुमार वर्मा,
सीनियर सेक्शन इंजीनियर/ड्राइँग/निर्माण

बिन मांगे ही सब कुछ मिल सकता है,
मां बाप के चरणों में सिर झुका कर देखिए।

आप के कारण भी दूसरों को परेशानी हो सकती है,
किसी के बगल में सिगरेट जला कर देखिए।

हर खूबसूरत चीज आसानी से नहीं मिलती,
गुलाब तोड़ने जाओ तो कांटे भी चूभते हैं।

झूठ से, सच से, जिससे भी यारी रखें,
मगर हर रिश्ते में वफादारी रखें।

जिंदगी से हमें कोई गम नहीं,
दोस्त थे कई मगर, दुश्मन से कम नहीं।

हर गम को खुशी से गुजार देता हूँ,
इसलिए आज मैं इतना खुश रहता हूँ।

जितना मिला है उसी में खुश रहना चाहिए,
जरूरत से ज्यादा मीठा भी तीता हो जाता है।

दिल एक है ख्वाहिशें हजार रखता हूँ,
एक टूटा नहीं दूसरा तैयार रखता हूं।

उसके तन से कपड़ा कम हो रहा,
लगता है वो नया-नया अमीर हो रहा।

चाय पीने से उनके होंठ जलते हैं,
लगता है हर काम बिना सोंच समझकर करते हैं।

जब तक सच सुनने की आदत थी, दोस्ती थी,
जब से सच बोलने लगा, लोग दुश्मन हो गए।

घर की दीवारें भी, जेल हो सकती है, यह उनसे पूछो,
जिन्होंने लॉकडाउन पीरियड घर में गुजारा हो।

लोगों ने कुछ चीजें क्या बनाई,खुद को भगवान समझ बैठे,
शुकर है अभी तक, कोई इंसान नहीं बनाया।

राजनीति में कहाँ ईमान चलता है,
यहाँ तो झूठ और फरेब का दुकान चलता है।

आज इस दल में हैं कल उस दल में जाएंगे,
कुरसी है जिधर, लगता है उधर ही जाएंगे।

ईर्ष्या-द्वेष दूर करने में जितनी सहायता हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी चीज से नहीं।

- सुभाष चंद्र बोस।

योग दिवस की एक झलक : 21 जून, 2021

विश्वास और प्रार्थना आत्मा के दो विटामिन हैं, कोई भी व्यक्ति इनके बिना स्वस्थ जीवन यापन नहीं कर सकता।

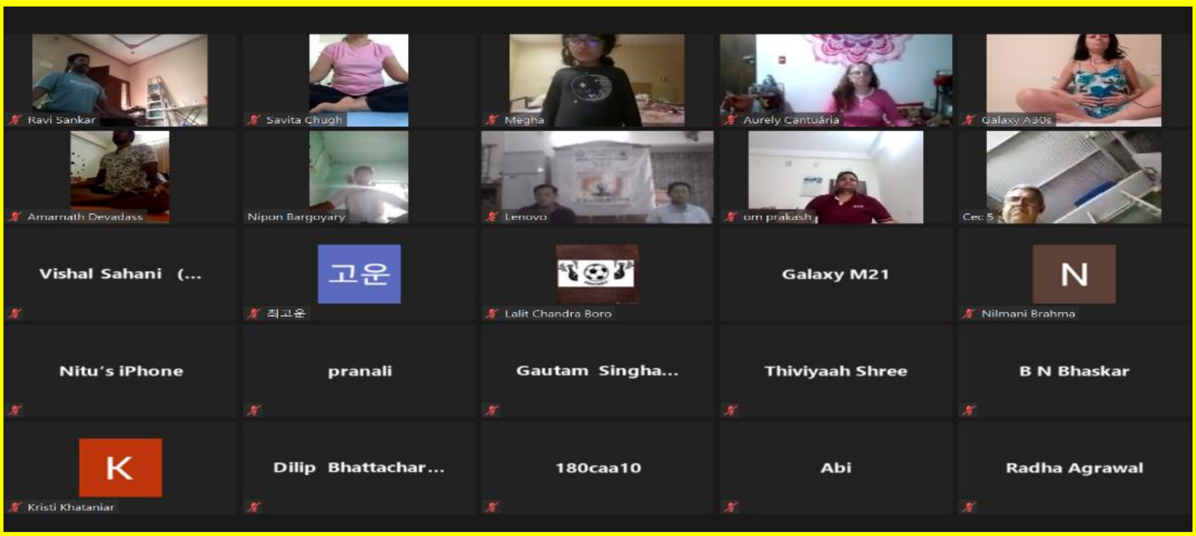

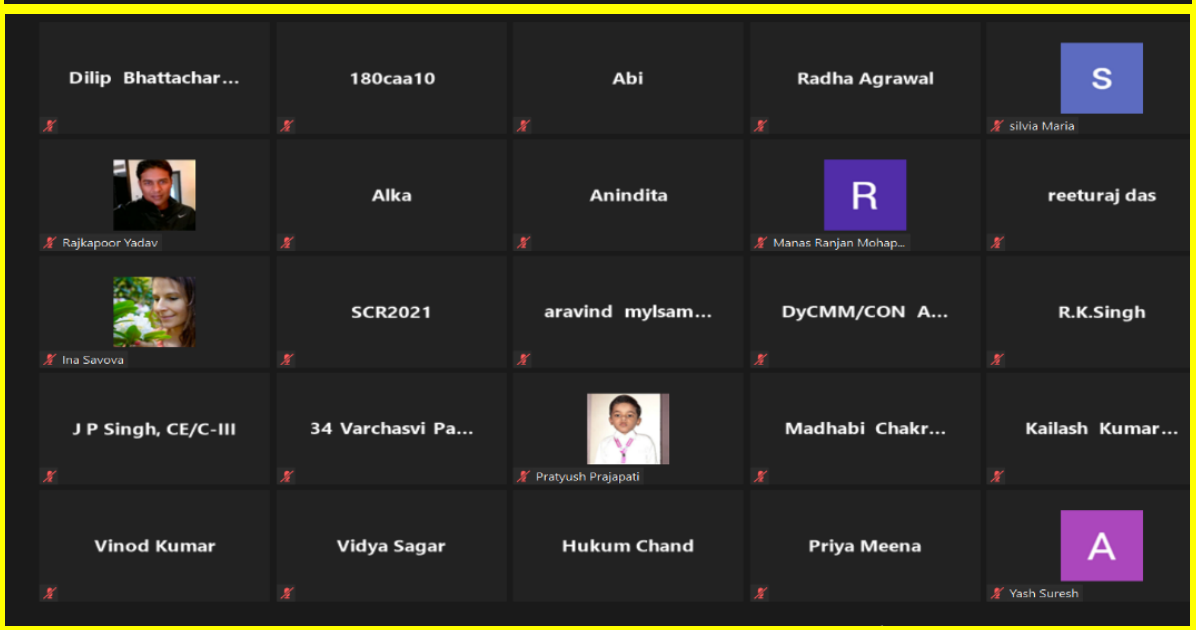

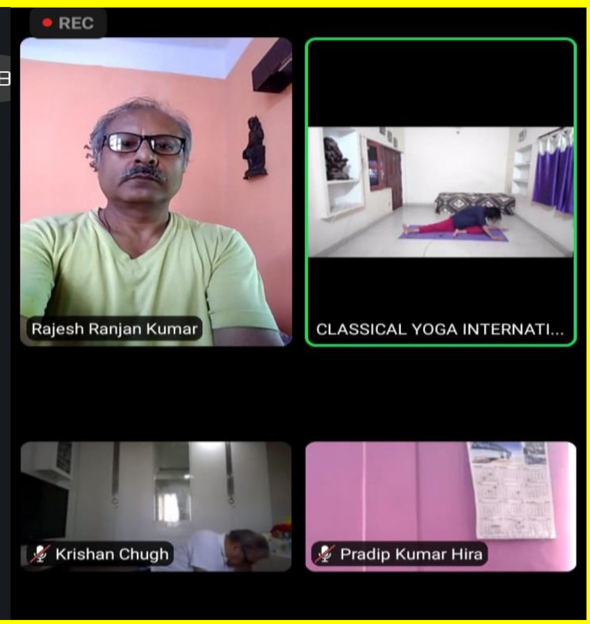

जो व्यक्ति व्यायाम के लिए समय नहीं निकालते, उन्हें बीमारी के लिए समय निकालना पड़ता है।

- संगठनात्मक प्रेरणा के लिए प्रभावी संप्रेषण की आवश्यकताएँ -

- श्री रितु राज दास,
सहायक कार्मिक अधिकारी, पू.सी.रेल(निर्माण)

उत्पादन के सबसे महत्वपूर्ण संसाधनों में से एक मानव संसाधन है। कई संगठनों को उत्पादन के इस मानव संसाधन के महत्व को बनाए रखना पड़ता है, क्योंकि उत्पादन का यही एकमात्र ऐसा संसाधन है जो उत्पादन के अन्य संसाधनों के प्रभावी उपयोग के लिए जिम्मेदार है। पारंपरिक संगठन में, यह हमेशा देखा गया है कि उत्पादन के सभी संसाधनों के उपयोग के लिए कार्य बल को प्रशिक्षित करने पर जोर दिया जाता है लेकिन उत्पादन के मानव संसाधन के उपयोग के प्रति अत्यंत कम महत्व दिया जाता है, जो उत्पादन के सभी संसाधनों में से सबसे जटिल माना जाता है। हमारे संगठन के प्रति सर्वश्रेष्ठ योगदान देने के लिए मानव को प्रेरित किया जाना चाहिए। कई शोधकर्ताओं और प्रबंधन विचारकों ने प्रेरणा के सिद्धांत विकसित किए हैं, उनमें से सबसे प्रमुख मैसलो का अनुक्रम सिद्धांत है।

आवश्यकताओं के प्रति मैसलो का अनुक्रम (सोपान)/ Maslow's Hierarchy of Needs

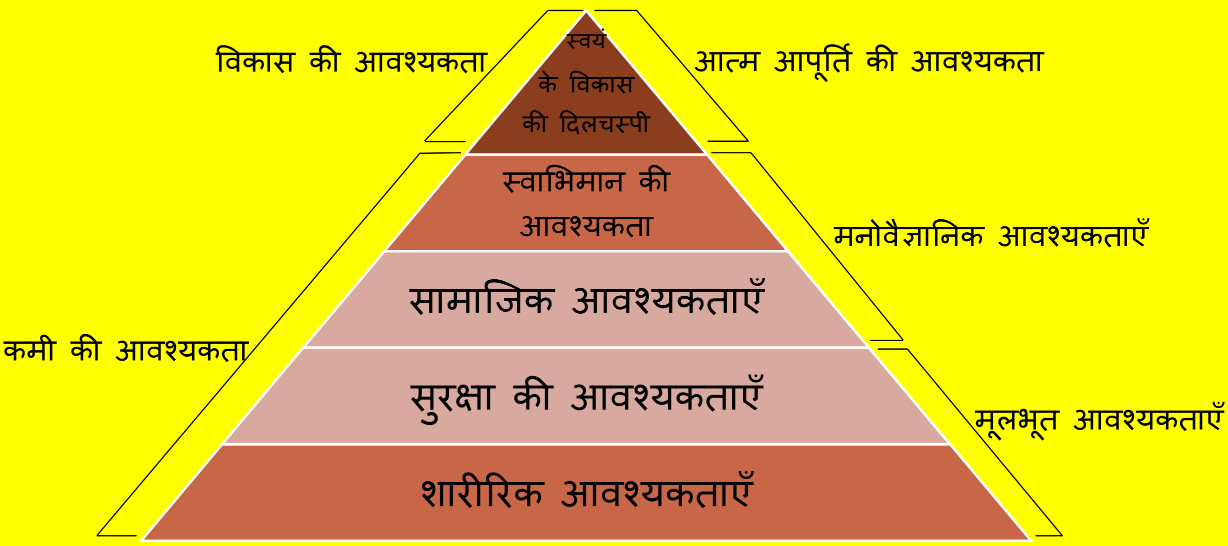

आइए जानते हैं इन जरूरतों के बारे में-

1. **शारीरिक आवश्यकता-** इस आवश्यकता में भोजन, वस्त्र, यौन-क्रिया आदि जैसी मूलभूत भौतिक आवश्यकताएं शामिल हैं जो भौतिक शरीर से संबंधित हैं। एक बार जब कोई व्यक्ति इन जरूरतों को पूरा करने में सक्षम हो जाता है, तो तत्काल वह आवश्यकता कायम नहीं रहता। व्यक्ति और आगे की आवश्यकताओं के लिए प्रयास करता है।
2. **सुरक्षा आवश्यकताएँ-** इस आवश्यकता में व्यक्तिगत जीवन की सुरक्षा जैसे- आश्रय, बचत, स्वयं तथा अपने परिवार के लिए सुरक्षा शामिल है।एक बार जब यह आवश्यकता पूरी हो जाती है तो व्यक्ति अगले उच्च स्तर की आवश्यकता को प्राप्त करने का प्रयास करता है।

3. **सामाजिक आवश्यकताएं-** इस आवश्यकता में एक साथ काम करने वाले सहयोगियों द्वारा प्राप्त समाज में पहचान/ लगाव/ प्रेम/ देखभाल की आवश्यकताएँ शामिल हैं। व्यक्ति चाहता है कि उसके साथियों द्वारा स्वयं को समाज में स्थान दिया जाए।
4. **सम्मान की आवश्यकता-** एक व्यक्ति उपर्युकत आवश्यकताओं को पूरा करने के बाद समाज में मान्यता प्राप्त करने की इच्छा रखता है।
5. **आत्म-साक्षात्कार-** इस आवश्यकता को प्राप्त करना कठिन है; इसमें किसी की अत्यधिक क्षमता के बारे में जानकारी शामिल है। यह आवश्यकता कदाचित ही प्राप्त होती है।

लेकिन, यह जरूरत सभी स्तर के कर्मचारियों के लिए समान नहीं है। मुख्य समस्या इस तथ्य में निहित है कि हम समस्या पर ध्यान केंद्रित करते हैं, समाधान पर नहीं। यह मामला ज्यादातर उच्च स्तर की लालफीताशाही वाले संगठन में देखा जाता है। शीर्ष अधिकारी जमीनी स्तर के कर्मचारियों से उनकी समस्या जानने या बात करने से कतराते हैं, परिणामस्वरूप वे उनके सामने आने वाली व्यावहारिक समस्या से अनभिज्ञ होते हैं और लगातार उन पर तरह-तरह के कार्यों की बौछार करते रहते हैं। जमीनी स्तर के कर्मचारियों को मध्यम स्तर के प्रबंधन के अलावा कोई अन्य पहुंच नहीं होती। अत: अपनी अक्षमताओं और काम करने के दौरान उपस्थित होने वाली बाधाओं को मध्य स्तर के प्रबंधन को इस विश्वास के साथ जानकारी देता है ताकि वे उनके मुद्दों को उच्च प्रबंधन के सामने प्रस्तुत करता है, जो आमतौर पर निर्णय लेने वाले प्राधिकारी होते हैं। निम्न स्तर और शीर्ष स्तर के प्रबंधन के बीच की दूरी के कारण संचार की श्रृंखला विकृत हो जाती है; इसलिए निम्न स्तर के कार्मिकों द्वारा प्रस्तुत अधिकांश तथ्य शीर्ष प्रबंधन के समक्ष ठीक से प्रस्तुत नहीं पाते हैं। उसके परिणामस्वरूप, संगठन में तथ्यों और यथास्थिति का हमेशा गलत प्रतिनिधित्व होता है। जमीनी स्तर पर यह भावना विकसित होती है कि शीर्ष प्रबंधन उनकी शिकायत/काम की बाधाओं के प्रति बहरा है और शीर्ष प्रबंधन यह मानने के लिए बाध्य है कि जमीनी स्तर पर के कर्मचारी काम टालने वाले हैं, लेकिन मध्य प्रबंधन को दोनों पक्षों के शिकायतों/मामलों का सामना करना पड़ता है। इस परिस्थिति में, पारंपरिक संगठन को जमीनी स्तर के कर्मचारियों की आवश्यकता को समझने के लिए एक साधन विकसित करना चाहिए ताकि मैस्लो की आवश्यकता अनुक्रम सिद्धांत में दर्शाई गई सामाजिक आवश्यकताओं को प्राप्त करने के लिए उन्हें उनका पूरा समर्थन प्राप्त हो। शीर्ष प्रबंधन की मिलनसार स्वभाव का जमीनी स्तर पर के कर्मचारियों द्वारा दुरूपयोग नहीं किया जाना चाहिए।

इस प्रकार, प्रणाली के कामकाज की बेहतर समझ रखने के लिए संगठनों को जमीनी स्तर से सुझाव का स्वागत करना चाहिए। वास्तविक कार्यकर्ता और नीति निर्माताओं के बीच संवादात्मक सत्र को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

उपरोक्त चर्चा से यह पता चलता है कि संगठन में कर्मचारियों को प्रेरित रखने के लिए संप्रेषण एवं सहयोग की प्रभावी श्रंखला बहुत आवश्यक है ताकि वे संगठनात्मक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए अपनी सर्वश्रेष्ठ क्षमता दे सकें ।

अगर हिंदुस्तान को हमें एक राष्ट्र बनाना है तो हिंदी ही राष्ट्रभाषा हो सकती है।

- महात्मा गांधी।

- जिन्दगी -

- श्री तपन चक्रवर्ती,
सहायक कार्यपालक इंजीनियर/निर्माण/डिजाइन

कभी हल तो कभी उलझी हुई पहेली सी है, जिन्दगी...
कभी अजनबी तो कभी सहेली सी है, जिन्दगी...
जिन्दगी की राहें हैं, उलझने हैं, खुशियाँ और गम भी...
कड़ा सफर है, कड़ी धूप है, चल रहे हो तुम चल रहे हैं, हम भी...
कभी भीड़ तो कभी भीड़ में भी अकेली सी है, जिन्दगी...
कभी हल तो कभी उलझी हुई पहेली सी है, जिन्दगी...
किसको है पता जिन्दगी का रास्ता कैसे कहाँ तक जाएगा...
मंजिल मिलेगी या मुसाफिर ढूंढ़ता रह जाएगा...
हौसले हैं, हसरते हैं, हैं यूँ तो है, भरपूर दमखम भी...
हाँ, कभी-कभी शक-ओ-सुबह के बादल रोकते हैं, कदम भी...
कभी गमों की शाम है, तो कभी अलबेली सी है, जिन्दगी...
कभी हल तो कभी उलझी हुई पहेली सी है, जिन्दगी...
यूँ ही चलते-चलते जिन्दगी की शाम ढल जाएगी...
भागती दौड़ती जिंदगी की रफ्तार बदल जाएगी...
थके हुए राही को जिन्दगी अपने पास बुला लेगी...
थोड़ा सा सुकूँ देने को अपनी बाहों में सुला लेगी...
अगले सफर के लिए खुद को तैयार करेगा फिर मुसाफिर...
नए हौंसलों के साथ, नए रास्तों पर चलेगा फिर मुसाफिर...
कभी करोड़ों की तो कभी धेली सी है, जिन्दगी...
कभी हल तो कभी उलझी हुई पहेली सी है, जिन्दगी...

-----------OOO-----------

आधुनिक भारत की संस्कृति एक विकसित शतदल कमल के समान है, जिसका एक-एक दल एक-एक प्रांतीय भाषा और उसकी साहित्य-संसकृति है। किसी एक को मिटा देने से उस कमल की शोभा ही नष्ट हो जाएगी।

- गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर

राजभाषा हिंदी की विभिन्न पुरस्कार योजनाएँ एवं प्रदान की जाने वाली राशि में वृद्धि

क्रम सं.	पुरस्कार योजना	पूर्व राशि	मौजूदा राशि
1.	(क) महाप्रबंधकों एवं उनसे ऊपर के स्तर के अधिकारियों के लिए कमलापति त्रिपाठी राजभाषा स्वर्ण पदक पुरस्कार योजना - [*01 (एक) पुरस्कार*]	5,000/-रु.	10,000/-रु.
	(ख) वरिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड एवं उनसे ऊपर के स्तर के अधिकारियों के लिए लागू रेल मंत्री राजभाषा रजत पदक पुरस्कार योजना [*30 (तीस) पुरस्कार*]	4,000/-रू.	8,000/-रू.
2.	तकनीकी रेल विषयों पर हिंदी में मौलिक लेखन को बढ़ावा देने और रेलों के कार्यकलाप से जुड़े तकनीकी विषयों पर हिंदी में अधिकाधिक पुस्तकें उपलब्ध कराने के लिए लागू लाल बहादुर शास्त्री तकनीकी मौलिक लेखन पुरस्कार योजना *प्रथम पुरस्कार (1)* *द्वितीय पुरस्कार (1)* *तृतीय पुरस्कार (1)*	15,000/-रू. 7,000/-रु. 3,300/-रू.	20,000/-रू. 10,000/-रू. 7,000/-रू.
3.	(क) कथा/कहानी, उपन्यास, नाटक एवं अन्य गद्य साहित्य के लिए प्रेमचंद पुरस्कार योजना *प्रथम पुरस्कार (1)* *द्वितीय पुरस्कार (1)* *तृतीय पुरस्कार (1)*	15,000/-रू. 7,000/-रु. 3,300/-रू.	20,000/-रू. 10,000/-रू. 7,000/-रू.
	(ख) काव्य/गजल संग्रह के लिए मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार योजना *प्रथम पुरस्कार (1)* *द्वितीय पुरस्कार (1)* *तृतीय पुरस्कार (1)*	15,000/-रू. 7,000/-रु. 3,300/-रू.	20,000/-रू. 10,000/-रू. 7,000/-रू.
4.	सरकारी कामकाज में हंदी का अधिकाधिक व प्रशंसनीय प्रयोग करने वाले रेलवे अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पुरस्कृत करने के लिए व्यक्तिगत नकद पुरस्कार योजना *(कुलः 134 पुरस्कार)*	1,500x134 = 2,01,000/-रू.	3,000x134 = 4,02,000/रू.

राष्ट्र के एकीकरण के लिए सर्वमान्य भाषा से अधिक बलशाली कोई तत्व नहीं है। मेरे विचार में हिंदी ही ऐसी भाषा है।

- लोकमान्य तिलक

क्रम सं.	पुरस्कार योजना	पूर्व राशि	मौजूदा राशि
5.	**अखिल रेल हिंदी निबंध प्रतियोगिता**		
	अखिल स्तर पर :		
	प्रथम पुरस्कार (1)	3,000/-रु.	5,000/-रू.
	द्‌वितीय पुरस्कार (2)	2,500/-रू.	4,000/-रू.
	तृतीय पुरस्कार (1)	2,000/-रू.	3,000/-रू.
	प्रेरणा पुरस्कार (5) [2,500x5]	7,500/-रू.	12,500/-रू.
6.	**अखिल रेल हिंदी वाक् प्रतियोगिता**		
	अखिल स्तर पर :		
	प्रथम पुरस्कार (1)	3,000/-रु.	5,000/-रू.
	द्‌वितीय पुरस्कार (2)	2,500/-रू.	4,000/-रू.
	तृतीय पुरस्कार (1)	2,000/-रू.	3,000/-रू.
	प्रेरणा पुरस्कार (5) [2,500x5]	7,500/-रू.	12,500/-रू.
7.	**अखिल रेल हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता**		
	अखिल स्तर पर :		
	प्रथम पुरस्कार (1)	3,000/-रु.	5,000/-रू.
	द्‌वितीय पुरस्कार (2)	2,500/-रू.	4,000/-रू.
	तृतीय पुरस्कार (1)	2,000/-रू.	3,000/-रू.
	प्रेरणा पुरस्कार (5) [2,500x5]	7,500/-रू.	12,500/-रू.
8.	**हिंदी के सर्वाधिक प्रयोग करने वाले विभागों के लिए सामूहिक पुरस्कार योजना**		
	प्रथम पुरस्कार	9,000/-रू.	12,000/-रू.
	द्‌वितीय पुरस्कार	6,000/-रू.	8,000/-रू.
	तृतीय पुरस्कार	4,000/-रू.	6,000/-रू.
9.	**आम जनता और रेल कर्मियों के रेल यात्रा संबंधी अनुभव/ संस्मरण लिखित रूप में हिंदी में आमंत्रित किये जाने के लिए अखिल भारतीय स्तर पर लागू रेल यात्रा वृत्तांत पुरस्कार योजना**		
	प्रथम पुरस्कार	4,000/-रू.	10,000/-रू.
	द्‌वितीय पुरस्कार	3,000/-रू.	8,000/-रू.
	तृतीय पुरस्कार	2,000/-रू.	6,000/-रू.
	प्रेरणा पुरस्कार (5) [4,000 x 5 =]	....	20,000/-रू.
10.	**राजभाषा प्रदर्शनी**	4,000/-रू.	10,000/-रू.
11.	**अखिल रेल राजभाषा सप्ताह समारोह**	1,25,000/-रू.	3,00,000/-रू.

- लम्हें -

श्री प्रसुन कुमार,
सीनियर सेक्शन इंजीनियर/निर्माण/ड्राइंग/योजना-1

एक प्रेम का फूल खिला था मुझमें।
जब हमसफर की छवि को देखा था तुझमें।।
क्या-क्या सपने संजोने लगा मैं था।
तेरे हर मनोने उठाने लगा मैं था।।
सोंचता था, जीवन की एक अनोखी दिशा अब है।
सावन के मौसम की हर ओर फिजा अब है।।
पर हुआ कुछ उलट ही जो न मैंने था सोंचा।
लगने लगा जैसे, उड़ते परिंदे को था किसी ने दबोचा।।
झकझोर के मुझे जो तूने सपनों से जगाया।
आखिर में, मैंने मोहब्बत में धोखा ही पाया।।
सोंचता हूँ, अब अकेला ही बैठ कर।
पतझड़ को पाया था सावन सोच कर।।
फिर एक दिन आएगा जीवन में सावन झूम कर।
जिससे महकेगी जमी, बारिश की बूँदों में भीग कर।।
सुखी जमी से सूखे पत्ते और काँटे हटेंगे।
फूल खिलेंगे बहार होगी, फिर नजारे दिखेंगे।।

- माँ -

श्री हिमांशु कुमार गुप्ता,
सीनियर सेक्शन इंजीनियर/निर्माण/डिजाइन

कोख में अपनी पाल-पोश, धरती में मुझको लाया है,
यह कर्ज है माँ का बच्चे पर, जिसे कोई चुका नहीं पाया है।

बिन बोले सब सुन लेती थी, बाहों में मुझे झुलाया है,
खुद गीले में माँ सोती थी, सुखे में मुझे सुलाया है।

हर राह से हाथ पकड़ तुने, जीवन जीना सिखलाया है,
संकट की घड़ी में माँ तुमने, आँचल में मुझे छुपाया है।

सही गलत क्या है जग में, तुने ही मुझे बताया है,
सुसंस्कार देकर माँ ने, इस जीवन को महकाया है।

मुझे मार कूट कर फिर तुने, खुद भी तो अश्रु बहाया है,
सबसे लड़कर माँ ने मुझको, इस काबिल आज बनाया है।

कहानी एक भटकी हुई आत्मा की

- श्रीमती बिन्दु कुमार,
पत्नी श्री राजेश रंजन कुमार, राजभाषा अधिकारी/नि.

नीला, विशाल, अनन्त, निस्सीम व्योम चारों ओर बिखरा पड़ा था। अपनी विराटता से परिपूर्ण, अपनी गहराइयों में लीन न जाने किस चिंतन में डूबा था। अनेकों ग्रहों, उपग्रहों के साथ मैं भी अपनी गति पाने उसमें भटक रही थी। उसकी अनन्तता मुझे रास आ गई थी। उसकी गहराइयों में डुबती - उतरती, भटकती - इठलाती, खिलखिलाती - मुस्कुराती मैं लम्बे समय से भ्रमण कर रही थी। मैं अपने में मगन थी| न कुछ पाने की इच्छा थी न कुछ खोने का दु:ख। मेरी जरूरत भी शून्य थी न मुझे भूख सताती न प्यास और न नींद ही। न मेरा कोई घर था न ठिकाना। न मेरा कोई शत्रु था और न ही कोई मित्र। न मेरी किसी से अपेक्षा थी न कोई मेरी उपेक्षा| समय मजे में गुजर रहा था। एक दिन भटकते - भटकते मैं एक ग्रह से टकरा गई। वहाँ का संसार देखकर मैं हतप्रभ हो गई। मैंने देखा एक भूखी - प्यासी स्त्री दिनभर कठिन परिश्रम करके प्राप्त पैसों से अपने बच्चे के लिए दूध - रोटी खरीदकर ले गई तथा उसे बड़े प्यार से खिलाया। उस समय उसके श्रांत - क्लांत एवं मलिन मुख पर आत्म संतुष्टि एवं वात्सल्य का सौंदर्य देखते ही बनता था। बच्चे के खा लेने के उपरांत उसने बचा - खुचा खाया तथा सो गई। मेरे मन में इच्छा जागृत हुई, कैसा होगा वह विलक्षण बालक, उस स्त्री की ममता का, वात्सल्य का केंद्र उसका जीवनाधार। काश ! मैं भी वह बालक होती। क्या अलौकिक अनुभव होगा ? मेरे मन में जागृत इच्छा से वशीभूत होकर मैंने एक स्त्री के गर्भ में प्रवेश किया| एक बालिका का शरीर धारण कर मैंने इस संसार में जन्म लिया| जन्म के समय ही मुझे भयंकर शारीरिक वेदना का अनुभव हुआ। मैं छटपटा उठी, यह अनुभव मेरे लिए नया था। मैंने सोचा इस संसार में प्रवेश करना ही कितना कष्टदायक है| कुछ देर बाद मुझे अत्यन्त उदर पीड़ा की अनुभूति हुई, मैं चीत्कार कर उठी, तभी मेरी माता ने अपना स्तन मेरे मुख से लगा दिया| थोड़ी देर के असफल प्रयास के बाद मैंने स्तनपान करना सीख लिया। स्तनपान कर मेरी उदर - पीड़ा शमित हो गई। यह मेरी भूख की प्रथम अनुभूति थी। तभी मेरे शरीर से कुछ स्त्राव हुआ मैंने स्वयं को गीला पाया मुझे असुविधा होने लगी मैं फिर चीत्कार कर उठी। माँ ने मेरे कपड़े बदले तो मुझे राहत मिली। फिर मल - विसर्जन का भी मुझे अनुभव हुआ। यह सब हमें अच्छा नहीं लग रहा था| भूख एवं मलमूत्र विसर्जन का फिर तो क्रम लग गया जो मुझे परेशान करता था। माँ मेरी सभी समस्याओं का समाधान करती थी। जब वह प्यार में मुझे अपने सीने से लगाती थी तो मैं अपनी सारी परेशानियाँ भूल जाती तथा परमानन्द में मग्न हो जाती। धीरे - धीरे माँ की वात्सल्य की छाया में मैं बड़ी होती गई। मुझे इस संसार की सर्दी - गर्मी, भौतिक संपन्नता, विपन्नता आदि का भेद पता चला। अपने आत्मस्वरूप को भूल कर लोग कैसे इस भौतकता के पीछे दौड़ रहे हैं, इसका आभास हुआ और इस भेड़चाल में मैं भी इस दौड़ का हिस्सा बन गई। परमानन्द का आश्रय माँ की भावनाओं का भी अनादर करने लगी। समय के प्रवाह में मैंने उस आनन्दरूपा देवी को भी खो दिया। अब यथार्थ के ठोस धरातल पर मैं आ गई। मुझे इस दुनिया के नग्न रूप का दर्शन हुआ| यहाँ कोई अपना न था। सभी स्वार्थ के रिश्ते थे। लोगों को सभी लाभ - हानि के रूप में तौलते थे। ईश्वर को छोड़ सभी भौतिक संपदा प्राप्त करने के लिए अपनी आत्मा तक को बेच रहे थे। सभी तरह

भौतिक रूप से सुसम्पन्न होकर मुझे शांति मिलेगी इसी आशा में मैं भी इस सांसारिक भागमभाग का हिस्सा बन गई । लेकिन हर उपलब्धि हर वैभव, संपत्ति मेरे मन में और अशांति पैदा कर रही थी। जिस संपदा को प्राप्त करने के लिए मैंने अपनों की अवमानना की; अच्छे - बुरे का भेद भूला दिया, वह मुझे शांति क्यों नहीं दे पा रही है। यह रहस्य मैं समझ नहीं पा रही थी। मेरे मन की शांति आँखों की नींद सुख - चैन सब खोता जा रहा था। अपना कहने को कोई न था। मेरी आत्मा इस शरीर रूपी पिंजरे को तोड़ उन्मुक्त आकाश में विचरण करने को तड़प रही थी। मुझे अपना अतीत याद आ रहा था। मैं स्वयं को कोस रही थी कि उस उन्मुक्त जीवन को छोड़ मैं क्यों इस शरीर के बंधन में पड़ी। इस आवागमन के चक्कर से, इस कर्मफल से मुझे कौन मुक्ति दिलाएगा? हे मुक्तिदाता ! आओ मेरा उद्धार करो, ताकि मैं उसी अनन्तता को पुनः प्राप्त कर सकूँ।

****

- जिन्दगी -

श्री प्रसुन कुमार,
सीनियर सेक्शन इंजीनियर/निर्माण/ड्राइंग/योजना-1

पिघल रही है जिन्दगी, यूँ ही मोम की तरह।
मायूसी की लौ में, जीवन कुछ तप सा रहा।।

आज देखता हर कोई मुझमें ही दोष है।
बस मुस्करा के पूछता हूँ अब तो संतोष है।।

पिघल कर, पाना इस मोम का कोई तो रूप है।
आज भले ही मेरे जीवन में ये कड़ी धूप है।।

अब आकार में आने को कुछ और वक्त ही सही।
किस्मत को तराशने वाला होगा तो जरूर कहीं।।

मुझे दिखती मंजिल अब करीब है।
बस इस संघर्ष से डट कर लड़ना ही अब जीत है।।

****

वही भाषा जीवित और जाग्रत रह सकती है जो जनता का ठीक-ठीक प्रतिनिधित्व कर सके और हिंदी इसमें समर्थ है।

- पीर मुहम्मद मूनिस

चिट्ठी के अन्दर

- श्री सुजय साहा राय,
उप मुख्य बिजली इंजीनियर/निर्माण/मालीगाँव

चिट्ठी के अन्दर - थे कुछ लब्ज,
कुछ कम उम्र वाली, मेरे उम्र से कुछ कम,
मेरे कद से थोड़ी ज्यादा, मैंने मन भर कर,
विचार भरे थे, दिल खोल कर, शब्दों में,
नुमाइश किए थे, उनकी प्रेरणा,
उनके प्यार की मिसाल,
त्याग और सत्य का विचार ।।

सरलता उनकी किसी से नहीं मिलती,
गुणवत्ता भर-भर कर विचरण करती थी,
उनके चेहरे पे मानों, बिना बादल के तुफान,
जैसे विरान में फूलों के बागान,
उनकी हँसी सौ बार मुझे मर कर,
जीने की उम्मीद देती थी,
मानो शहर में सिर्फ वही है,
सुगंध फैलाए हुए ।।

मन ही मन, मेरा झनझनाहट होता था,
कहीं इस धरती से उन्हें उठा के न ले जाए,
भगवान अपने पास,
उत्सर्गित की थीं, वो अपना जीवन,
दूसरों की भलाई के लिए,
एक पल भी कभी, नहीं मुड़ी थी पीछे,
मैं दूर से सदा देखता था उन्हें,
दर्शन से ज्यादा कुछ चाहत, नहीं था मेरा,
चलते रहने का नाम, शायद जीवन है,
यह सीख मैंने उनसे सीखी है,
चिट्ठी के अन्दर - थे कुछ लब्ज,
जो आज भी बन्द पड़े हैं ।।

-###########-

जिसका किसी भी तरह वर्णन किया जाना संभव नहीं है, जो कैसा है यह जाना नहीं जा सकता, जिसका अस्तित्व नित्य ही रहता है - ईश्वर को मैंने इसी रूप में अनुभव किया है।

- ज्ञानेश्वर

तीर्थों का तीर्थ विष्णुपद मंदिर (गया)

श्री अरूण कुमार मिश्रा
-सीनियर सेक्शन इंजीनियर/बिजली/निर्माण/न्यू जलपाईगुड़ी

विष्णुपद मंदिर को अहिल्याबाई ने बनवाया थ। यह मंदिर काला पत्थर का बना हुआ है। विष्णुपद मंदिर में भगवान विष्णु का चरण चिन्ह है। विश्व में, विष्णुपद ही एक ऐसा स्थान है जहाँ भगवान विष्णु के चरण का साक्षात् दर्शन कर सकते हैं।

यहाँ चरण के स्पर्श से ही मनुष्य समस्त पापों से मुक्त हो जाता है। यहां पर पितरों के मुक्ति के लिए पिंडदान होता है। यहाँ सालों भर पिंडदान होता रहता है। भगवान श्री राम माता सीता के साथ महाराज दशरथ का पिंडदान करने आए थे, जहाँ माता सीता ने महाराज दशरथ को बालू फल्गु नदी के जल से पिंड अर्पित किया था, जिसके बाद से यहाँ बालू से बने पिंड देने का महत्व है।

18वीं शताब्दी में महारानी अहिल्याबाई ने मंदिर का जीर्णोद्धार कराया था। पर यहाँ भगवान विष्णु का चरण सतयुग काल से ही है।

*******########*********

देवता न बड़ा होता है, न छोटा, न शक्तिशाली होता है न अशक्त, वह उतना ही बड़ा होता है जितना बड़ा उपासक उसे बनाना चाहता है।

- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

- एक किरदार खोया हुआ -

श्री सुनील कुमार सहगल,
प्रमुख मुख्य सामग्री प्रबंधक/निर्माण/मालीगाँव

कई बार क्यूँ लगता है

कि मैं जिया ही नहीं ?

पी लूँ कितना भी तुम्हें

पर फिर लगता है

कि पिया ही नहीं।

वो यादें, कब खामोशियाँ बन गईं,

वो खामोशियाँ, कब यादें बन गईं।

फिर भी लगता है, कुछ बदला ही नहीं।

लुका छिपी का खेल और तेरी उन

गलियों में खो जाना

मेरा तुझे ढूँढ़ना और

फिर खुद को भूल जाना

कितना कुछ खो गया।

फिर भी वो किरदार खोया हुआ,

उन गलियों में,

आज भी बदला नहीं।

*****#######*****

कवि लिखने के लिए तब तक कलम नहीं उठाता जब तक उसकी स्याही प्रेम की आहों से सराबोर नहीं हो जाती।

- शेक्सपियर

- जैसी करनी, वैसी भरनी -

- सुश्री अनामिका मिश्रा,
सुपुत्री श्री अरुण कुमार मिश्रा,
सीनि.से.इंजी./बिजली/निर्माण/न्यू जलपाईगुड़ी

"बड़ा ही विचित्र माया है, जीवन कभी तेज धूप, कभी पीपल की छाया है ;
जीवन को तरासो तो पत्थर भी मूर्ती बन जाती है, कोयले के खान में हीरे, कोहिनूर मिल जाती है।"

कहने का तात्पर्य यह है कि जीवन आपके हाथों की कठपुतली है और आपकी कड़ी मेहनत, दृढ़ संकल्प, एवं आपका हुनर, जो आपके जीवन को विभिन्न तरीके से जीने में सहुलियत प्रदान करता है। इस कथन पर चलने वाले, सफलता की सीढ़ियाँ बनाने वाले और उस पर चढ़ने वाले व्यक्ति ही अपने सही मुकाम हासिल कर पाते हैं। ये वही लोग हैं, जो पत्थर को तरास कर मूर्तियाँ बना लेते हैं। कुछ लोग तो ऐसे होते हैं जो कोयले के खान में कोहिनूर खोजने में जीवन लगा देते हैं, पर कोई बिरला ही ऐसा होता है, जो कोहनूर की चमक पा लेता है और जो इससे वंचित रह जाते हैं वे अपने माथे की लेख पर खुद को कोसते हैं। कहने और देखने को तो भाँति-भाँति के लोग हैं, पर इनको शब्दों में सजाकर पन्नों में उतारना जैसे रेगिस्तान में पानी खोजने जैसा होगा। इसलिए इस बात को यहीं विराम देते हुए और आगे बढ़ते हैं।

"कोरोना" नाम तो सुना होगा? मुझे ये पूछते हुए हँसी आ गयी, लेकिन शोले फिल्म के प्रसार के बाद से कुछ घरों की माँ कहने लगीं, "बेटा सो जा, नहीं तो गब्बर आ जाएगा"। गब्बर को शोले ने मशहुर किया और कोरोना को चीन ने। इस देश ने तो इसे भरपुर मात्रा में दुनिया में फैला दिया। इस बात में कितनी सच्चाई है, ये तो पता नहीं परन्तु, आज जो पूरा विश्व जुझ रहा है या जो नुकसान झेल चुका है, वह किसी दर्दनाक हादसे से कम नहीं है। मैं इस महामारी का विश्लेषण हादसे से इसलिए कर रही हूँ क्योंकि ये अचानक से हमारे परिवेश में आया है। आज भी हम डर के साये में जी रहे हैं। ऐसा लगता है जैसे हम पृथ्वी पर नहीं कोई दूसरे ऐसे ग्रह पर हैं, जिसकी हमने कभी कल्पना भी नहीं की थी।

"अपने ही लोगों से बनानी पड़ी दूरी, अब मास्क पहनना तो हुआ जरूरी,
जी भर के सांस लेना दुस्वार हुआ, कोरोना वायरस से जीना बेहाल हुआ।"

अब मास्क पहनना आवश्यक हो गया है। हे भगवान! तुझे क्या दोष दें, ये अपने ही कर्मों का फल है, जो साल बीस में विष जैसा ज्ञात हुआ। कर्मों का फल तो भुगतना ही था। साल बीस एवं इक्कीस में इसका स्वाद मिला।

हमने जो इस पृथ्वी पर रहकर पेड़ काटा, जानवरों को मारा, यहाँ तक ही नहीं उनके माँस का भोजन तक बना लिया। अब यह कहना फिजुल होगा की चीन ने ऐसा किया क्योंकि भुगतना तो पूरे विश्व को पड़ रहा है। हम मनुष्यों ने जानवरों को कैद कर रखा था। उनको मास्क पहनाते थे, हमने खुद को प्रकृति में सबसे ऊपर रखा, परन्तु प्रकृति की चीजों को कद्र ना करके उनसे छेड़-छाड़ किया है, तो देखिए जानवर आजाद हो गए और हम घर में कैद हो गए और घर से निकलना है तो मास्क पहन कर। अपनी आजादी के लुटेरे हम खुद बन गए। कहने को तो बहुत कुछ है, पर मैं इतना कहकर बातों को विराम देना चाहूँगी कि प्रकृति ने हमें सुधरने का एक मौका दिया है, इसे हमें गँवाना नहीं चाहिए।

जय हिन्द, जय भारत!

12 ‘प्र’ से किया जा सकता है राजभाषा हिंदी का समुचित विकास

डॉ.सुमीत जैरथ, आई.ए.एस.,
सचिव
राजभाषा विभाग,
गृह मंत्रालय,
भारत सरकार

राजभाषा अर्थात राज-काज की भाषा, अर्थात सरकार द्वारा आम-जन के लिए किए जाने वाले कार्यों की भाषा। राजभाषा के प्रति लगाव और अनुराग राष्ट्र प्रेम का ही एक रूप है। संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया था। वर्ष 1975 में राजभाषा विभाग की स्थापना की गई और यह दायित्व सौंपा गया कि सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों/मंत्रालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में किया जाना सुनिश्चित किया जाए। तब से लेकर आज तक देश भर में स्थित केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों एवं विभागों आदि में सरकार की राजभाषा नीति का अनुपालन तथा सरकारी काम-काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने में राजभाषा विभाग की अहम् भूमिका रही है। राजभाषा विभाग अपने क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के माध्यम से सभी स्तरों पर राजभाषा का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करता है।

हम सभी जानते हैं कि जब हमारे संविधान निर्माता संविधान को अंतिम स्वरूप दे रहे थे, इसका आकार बना रहे थे, उस वक्त कई सारी ऐसी चीजें थी जिसमें मत-मतांतर थे। देश की राजभाषा क्या हो?, इसके विषय में इतिहास गवाह है कि तीन दिन तक इस संदर्भ में बहस चलती रही और देश के कोने-कोने का प्रतिनिधित्व करने वाली संविधान सभा में जब संविधान निर्माताओं ने समग्र स्थिति का आकलन किया, दूरदर्शिता के साथ अवलोकन, चिंतन कर एक निर्णय पर पहुंचे तो पूरी संविधान सभा ने सर्वानुमत से 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार करने का निर्णय लिया।

26 जनवरी 1950 को लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान रखा गया कि संघ की राजभाषा ‘हिंदी’ व लिपि ‘देवनागरी’ होगी। अनुच्छेद 351 के अनुसार भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से, और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए हिंदी की समृद्धि सुनिश्चित की जानी है।

महान लेखक महावीर प्रसाद द्विवेदी की पंक्तियां 'आप जिस प्रकार बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए| भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए|' को ध्यान में रखते हुए राजभाषा – हिंदी को और सरल, सहज और स्वाभाविक बनाने केलिए राजभाषा विभाग दृढ़ संकल्प है। केंद्र सरकार के कार्यालयों/मंत्रालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा हिंदी में काम करने को दिन-प्रति-दिन सुगम और सुबोध बनाने का प्रयास किया जा रहा है। साथ ही साथ प्रधानमंत्री जी के "आत्मनिर्भर भारत" "स्थानीय के लिए मुखर हों (Self Reliant India- Be vocal for local) के अभियान को आगे बढ़ाते हुए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत में सी-डेक, पुणे के सौजन्य से निर्मित स्मृति आधारित अनुवाद टूल "कंठस्थ" का विस्तार कर रहा है जिससे अनुवाद के क्षेत्र में समय की बचत करने के साथ-साथ एकरूपता और उत्कृष्टता भी सुनिश्चित हो|

राजकीय प्रयोजनों में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार बढ़ाने तथा विकास की गति को तीव्र करने संबंधी संवैधानिक दायित्वों को पूर्ण करने के संबंध में हमारी प्रभावी रणनीति किस प्रकार की होनी चाहिए, इसका मूल सूत्र क्या होना चाहिए?, इस पर विचार करने के दौरान मुझे माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा दिए जाने वाले 'स्मृति-विज्ञान' (Mnemonics) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और उपयोगी नजर आती है। विदेश से भारत में निवेश बढ़ाने के लिए माननीय प्रधानमंत्री जी के छह डी-

Democracy (लोकतंत्र)

Demand (मांग)

Demographic Dividend (जनसांख्यिकीय विभाजन)

Deregulation (अविनियमन)

Descent (उत्पत्ति)

Diversity (विविधता)

से प्रेरणा लेते हुए राजभाषा के सफल कार्यान्वयन के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने "12 प्र की रणनीति-रूपरेखा (Frame work) की संरचना की है, जो निम्न प्रकार से है :

1.प्रेरणा (Inspiration and Motivation)

प्रेरणा (Inspiration) का सीधा तात्पर्य पेट की अग्नि (Fire in the belly) को प्रज्ज्वलित करने जैसा होता है। हम सभी यह जानते हैं कि प्रेरणा में बड़ी शक्ति होती है और यह प्रेरणा सबसे पहले किसी भी चुनौती को खुद पर लागू कर दी जा सकती है। प्रेरणा कहीं से भी प्राप्त हो सकती है लेकिन यदि संस्थान का शीर्ष अधिकारी किसी कार्य को करता है तो निश्चित रूप से अधीनस्थ अधिकारी/कर्मचारी उससे प्रेरणा प्राप्त करते हैं ।

2 प्रोत्साहन (Encouragement)

मानव स्वभाव की यह विशेषता है कि उसे समय-समय पर प्रोत्साहन की आवश्यकता पड़ती है। राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में यह प्रोत्साहन अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अधीनस्थ अधिकारियों/कर्मचारियों को समय-समय पर प्रोत्साहित करते रहने से उनका मनोबल ऊंचा होता है और उनके काम करने की शक्ति में बढ़ोतरी होती है।

3 प्रेम (Love and Affection)

वैसे तो प्रेम जीवन का मूल आधार है किंतु कार्य क्षेत्र में अपने शीर्ष अधिकारियों द्वारा प्रेम प्राप्त करना कार्य क्षेत्र में नई ऊर्जा का संचार करता है। राजभाषा नीति सदा से ही प्रेम की रही है यही कारण है कि आज पूरा विश्व हिंदी के प्रति प्रेम की भावना रखते हुए आगे बढ़ रहा है।

4 प्राइज अर्थात पुरस्कार (Rewards)

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा प्रत्येक वर्ष राजभाषा कीर्ति पुरस्कार और राजभाषा गौरव पुरस्कार दिए जाते हैं। राजभाषा कीर्ति पुरस्कार केंद्र सरकार के मंत्रालयों/विभागों/बैंकों उपक्रमों आदि को राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए दिए जाते हैं

और राजभाषा गौरव पुरस्कार विभिन्न मंत्रालयों/विभागों/उपक्रमों बैंकों आदि के सेवारत तथा सेवानिवृत अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा हिंदी में लेखन कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। यह पुरस्कार 14 सितंबर, हिंदी दिवस के दिन माननीय राष्ट्रपति महोदय द्वारा प्रदान किए जाते हैं। पुरस्कारों का महत्व इस बात से समझा जा सकता है कि देश के कोने-कोने से इन पुरस्कारों के लिए प्रविष्टि आती है। जब मैंने राजभाषा विभाग का कार्यभार संभाला उस समय स्मृति आधारित अनुवाद टूल 'कंठस्थ' के अंदर डेटाबेस को मजबूत करने के लिए स्वस्थ प्रतियोगिता एवं सचिव(रा.भा.) की ओर से प्रशस्ति पत्र देने का निर्णय किया। इस कदम का यह परिणाम हुआ कि लगभग छह महीने के अंदर ही कंठस्थ का डाटा 20 गुना से ज्यादा बढ़ गया। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि प्रतिस्पर्धा एवं प्राइज यानि पुरस्कार का महती योगदान होता है।

5 प्रशिक्षण (Training)

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के माध्यम से प्रशिक्षण का कार्य करता है। पूरे वर्ष अलग-अलग आयोजनों में सैकड़ों की संख्या में प्रशिक्षणार्थी इन संस्थानों के माध्यम से प्रशिक्षण पाते हैं। कहते हैं – "आवश्यकता, आविष्कार और नवीकरण की जननी है।" कोरोना महामारी ने हम सभी के सामने अप्रत्याशित संकट और चुनौती खड़ी कर दी। समय-समय पर प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र को संबोधित कर हम सभी को इस महामारी से लड़ने के लिए संबल प्रदान किया। इससे प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने आपदा को अवसर में परिवर्तित कर दिया। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का आश्रय लेते हुए – ई-प्रशिक्षण और माइक्रोसॉफ्ट टीम्स के माध्यम से हमारे दो प्रशिक्षण संस्थान - केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो ने पहली बार ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत-स्थानीय के लिए मुखर हों (Be Local for Vocal) अभियान के अंतर्गत राजभाषा विभाग द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम को स्वदेशी NIC-Video Desk Top पर माइग्रेट किया जा रहा है।

6 प्रयोग (Usage)

'यदि आप प्रयोग नहीं करते हैं तो आप उसे भूल जाते हैं (If you do not use it, you lose it) हम जानते हैं कि यदि किसी भाषा का प्रयोग कम किया जाए या न के बराबर किया जाए तो वह धीरे-धीरे मन मस्तिष्क के पटल से लुप्त होने लगती है इसलिए यह आवश्यक होता है की भाषा के शब्दों का व्यापक प्रयोग समय समय पर करते रहना चाहिए। हिंदी का प्रयोग अपने अधिक से अधिक काम में मूल रूप से करें ताकि अनुवाद की बैसाखी से बचा जा सके और हिंदी के शब्द भी प्रचलन में रहें।

7 प्रचार (Advocacy)

संविधान ने हमें राजभाषा के प्रचार का एक महत्वपूर्ण दायित्व सौंपा है जिसके अंतर्गत हमें हिंदी में कार्य करके उसका अधिक से अधिक प्रचार सुनिश्चित करना है। हिंदी के प्रचार में हमारे शीर्ष नेतृत्व – माननीय प्रधानमंत्री जी तथा माननीय गृह मंत्री जी राजभाषा हिंदी के मेसकोट- ब्रैंड राजदूत (Brand Ambassadors) के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। देश-विदेश के मंचों पर हिंदी के प्रयोग से राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों का उत्साह बढ़ा है। हम जानते हैं कि स्वतंत्रता के संघर्ष के दौरान राजनीतिक, सामाजिक आदि क्षेत्रों में एक संपर्क भाषा की आवश्यकता महसूस की गई। संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का पक्ष इसलिए प्रबल था क्योंकि इसका अंतरप्रांतीय प्रचार शताब्दियों पहले ही हो गया था। उसके इस प्रचार में किसी राजनीतिक आंदोलन से ज्यादा भारत के विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित तीर्थ स्थानों में पहुंचने वाले श्रद्धालुओं का योगदान था। उनके द्वारा भिन्न-भिन्न भाषा-भाषियों के साथ संपर्क करने का एक प्रमुख माध्यम भाषा हिंदी थी जिससे स्वत: ही हिंदी का प्रचार होता था। आधुनिक युग में प्रचार का तरीका भी बदला है। तकनीक के इस युग में संचार माध्यमों को बड़ा योगदान है इसलिए राजभाषा हिंदी के प्रचार में भी इन माध्यमों का अधिकतम उपयोग समय की मांग है।

8 प्रसार (Transmission)

राजभाषा हिंदी के काम का प्रसार करना सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों आदि की प्राथमिक जिम्मेदारी में है और

यह संस्था प्रमुख का दायित्व है कि वह संविधान के द्वारा दिए गए दायित्वों जिसमें कि प्रचार-प्रसार भी शामिल है, का अधिक से अधिक निर्वहन करे। राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और कार्यालय स्तर पर हिंदी में लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में हिंदी गृह-पत्रिकाओं का विशेष महत्व है, इसलिए राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न केंद्रीय संस्थानों द्वारा प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ पत्रिकाओं को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार दिया जाता है। राजभाषा विभाग द्वारा अपनी वेबसाइट rajbhasha.gov.in पर बनाए गए ई-पत्रिका पुस्तकालय के माध्यम से हिंदी के पाठक विभिन्न सरकारी संस्थानों द्वारा प्रकाशित होने वाली ई-पत्रिकाओं से लाभान्वित हो सकेंगे| राजभाषा हिंदी के प्रसार में दूरदर्शन, आकाशवाणी की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके साथ-साथ बालीवुड ने हिंदी के प्रसार में अद्वितीय योगदान दिया है।

9 प्रबंधन (Administration and Management)

यह सर्वविदित है कि किसी भी संस्थान को उसका कुशल प्रबंधन नई ऊचाइयों तक ले जा सकता है इसे ध्यान में रखते हुए संस्था प्रमुखों को राजभाषा के क्रियान्वयन संबंधी प्रबंधन की जिम्मेदारी सौंपी गई है। राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12 के अनुसार केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व है कि वह राजभाषा अधिनियम 1963, नियमों तथा समय-समय पर राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का समुचित रूप से अनुपालन सुनिश्चित कराएं, इन प्रयोजनों के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच-बिंदु बनवाएं और उपाय करें।

10 प्रमोशन (पदोन्नति) (Promotion)

राजभाषा हिंदी में तभी अधिक ऊर्जा का संचार होगा, जब राजभाषा कार्यान्वयन के लिए नियुक्त अधिकारी एवं कर्मचारी ; केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के सदस्यगण, सभी उत्साहवर्धक और ऊर्जावान हों और अपना कर्तव्य पूरी निष्ठा और समर्पण से निभाएं| समय-समय पर प्रमोशन (पदोन्नति) मिलने पर निश्चित रूप से उनका मनोबल बढ़ेगा और इच्छाशक्ति सुदृढ़ होगी|

11 प्रतिबद्धता (Commitment)

राजभाषा हिंदी को और बल देने के लिए मंत्रालय/विभाग/सरकारी उपक्रम/राष्ट्रीयकृत बैंक के शीर्ष नेतृत्व (माननीय मंत्री महोदय, सचिव, संयुक्त सचिव (राजभाषा), अध्यक्ष और महाप्रबंधक) की प्रतिबद्धता परम आवश्यक है| माननीय संसदीय राजभाषा समिति के सुझाव अनुसार और राजभाषा विभाग के अनुभव से यह पाया गया है कि जब शीर्ष नेतृत्व हिंदी के प्रगामी/उत्तरोत्तर ही नहीं, अपितु अधिकतम प्रयोग के लिए स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हैं तब उनके उदाहरणमय नेतृत्व (Exemplery Leadership) से पूरे मंत्रालय/विभाग/उपक्रम/बैंक को प्रेरणा और प्रोत्साहन मिलता है| जब वे हिंदी के लिए एक अनुकूल और उत्साहवर्धक वातावरण बनाते हैं और बीच-बीच में हिंदी के कार्यान्वयन की निगरानी (Monitoring) करते हैं तब हिंदी की विकास यात्रा और तीव्र होती है जैसे कि गृह मंत्रालय और शिक्षा मंत्रालय में देखा गया है| अभी हाल में ही राजभाषा विभाग ने सबको पत्र लिखकर आग्रह किया है

(क) हर माह में एक बार सचिव/अध्यक्ष अपनी अध्यक्षता में जब वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक करते हैं तब इसमें हिंदी में काम-काज की प्रगति और राजभाषा नियमों के कार्यान्वयन का मद भी अवश्य रखें और चर्चा करें|

(ख) अपने मंत्रालय/विभाग/संस्थान में अपने संयुक्त सचिव (प्रशासन)/प्रशासनिक प्रमुख को ही हिंदी कार्यान्वयन का उत्तरदायित्व दें और हर तिमाही में उनकी अध्यक्षता में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति (OLIC) की बैठक करें|

12 प्रयास (Efforts)

राजभाषा कार्यान्वयन को प्रभावी रूप से सुनिश्चित करने की दिशा में यह अंतिम 'प्र' सबसे महत्वपूर्ण है। इसके अनुसार हमें लगातार यह प्रयास करते रहना है कि राजभाषा हिंदी का संवर्धन कैसे किया जाए।

यहां कवि सोहन लाल द्विवेदी जी की पंक्तियां एकदम सटीक बैठती हैं कि

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।
नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है,
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है।
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है।
आख़िर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।
डुबकियां सिंधु में गोताखोर लगाता है,
जा जाकर खाली हाथ लौटकर आता है।
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में,
बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में।
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।
असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो,
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो।
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम,
संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम।
कुछ किये बिना ही जय जयकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

संवैधानिक दायित्वों को पूर्ण करते हुए राजभाषा हिंदी को और अधिक सरल बनाने के लिए राजभाषा विभाग दृढ़ संकल्प और निरंतर प्रयासरत है| विभाग सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (Information and Communication Technology) का भी आश्रय ले रहा है| विभाग का मानना है कि राजकीय प्रयोजनों में हिंदी की गति को तीव्र करने के लिए ये दोनों आवश्यक परिस्थितियां (Necessary Conditions) हैं| इस दिशा में और गति देने के लिए शीर्ष नेतृत्व की प्रतिबद्धता और प्रयास पर्याप्त परिस्थितियां (Sufficient Conditions) हैं|

संघ की राजभाषा नीति के अनुसार हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन तत्परता और पूरी निष्ठा के साथ करें। हम स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हुए अन्य अधिकारियों / कर्मचारियों से भी राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि प्रशासन में पारदर्शिता आए और आमजन सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ निर्बाध रूप से उठा सके। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इन बारह 'प्र' को ध्यान में रखकर राजभाषा हिंदी का प्रभावी कार्यान्वयन करने की दिशा में सफलता प्राप्त होगी और हम सब मिलकर माननीय प्रधानमंत्री जी के 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत'; 'सुदृढ़ आत्मनिर्भर भारत' के सपने को साकार करने में सफल होंगे।

===========

- राक्षसेन्द्र रावण -

- राजेश रंजन कुमार, राजभाषा अधिकारी/निर्माण

शुद्ध आर्य ऋषि पुलस्त्य एवं महिदेव तृणबिन्दु की पुत्री इलविला का पुत्र वैश्रवण (घनेश-कुबेर) था और दैत्यराज पुत्री कैकसी के पुत्र का नाम "रावण" था। कुम्भकर्ण एवं विभीषण रावण के भाई थे। रावण का विवाह मय दानव की पुत्री मन्दोदरी से हुई थी। कुम्भकर्ण का विवाह दैत्यपति विरोचन की दौहित्री वज्रज्वाला से हुई थी और विभीषण का विवाह गंधर्व राजा शैलूष की पुत्री सामा से हुई थी। लंका महाराज्य के अंतर्गत - 1. यवद्वीप 2. सुमात्रा 3. मलाया 4. कुशद्वीप एवं 5. मेडागास्कर शामिल थे। रावण का प्रधान सलाहकार नाना सुमाली था। प्रवण, प्रहस्त, महोदर, मारीच, महापार्श्व, महादष्ट्र, यज्ञकोष, दूषण, खर, त्रिशिरा, अनुगत आदि रावण के मंत्री, सेनापति एवं नगरपाल थे। मेघनाद, त्रिशिरा, देवान्तक, नरान्तक, अतिकाम, महोदर, महापार्श्व रावण के पुत्र थे। ज्येष्ठ पुत्र मेघनाद का विवाह दानव कन्या सुलोचना से हुई थी।

भारत के दक्षिणारण्य में बहिष्कृत जन-जातियाँ संगठित हो गई थीं जैसे- दस्यु, महिष, कपिनाग, पौण्ड्र, द्रवीड़, काम्बोज, फरद, खस, पल्लव, चीन, किरात, मल्ल, दरद एवं शक आदि। राजा सगर ने अपने पिता के शत्रुओं को मुनी वशिष्ठ की सलाह पर वेद बहिष्कृत कर दक्षिण के अरण्यों में भेज दिया था। ये शत्रु थे - शक, यवन, काम्बोज, चोल एवं केरल। इसी प्रकार ययाति ने नाराज होकर अपने पुत्र तर्वशु को जातिभ्रष्ट कर सपरिवार दक्षिण की ओर खदेड़ दिया था। ठीक इसी प्रकार विश्वामित्र ने आज्ञा के उल्लंघन में 50 (पचास) कुटुम्बों को दक्षिणारण्य कर दिया था। इनके वंशधर आकर आन्ध्र, पौण्ड्र, शबर, पुलिन्द आदि जातियों में परिवर्तित हो गए। पण्य जाति जो लोभी, ठग एवं व्यापारी वणिक थे, निष्काषित होकर दक्षिण में आकर बस गए एवं चोल जाति कहलाने लगे। यही पण्य और चोल जाति कालांतर में लंका, मेडागास्कर, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, इथियोपिया चले गए और वहीं बस गए।

रावण का उद्येश्य : आर्य-अनार्य का समूल नष्ट कर "रक्ष" संस्कृति की स्थापना करना था। रावण ने यम, कुबेर, वरूण, इन्द्र पर विजय हासिल करने का संकल्प लिया था।

रावण ने अपना संबंध समुद्र मार्ग के माध्यम से दक्षिण भारत से जोड़ लिया था। इसके लिए उसने सहस्त्रों समर्थ राक्षसों को छद्म वेश धारण करवाकर भारत के विभिन्न प्रदेशों में भेज दिया था जो सब जातियों में रावण द्वारा स्थापित राक्षस धर्म का प्रचार करते तथा लोगों को राक्षस बनाते थे। रावण ने दण्डकारण्य का राज्य अपनी बहन सूर्पनखा को दिया था। अपनी मौसेरी भाई खर तथा सेनानायक दूषण को 14 हजार सुभट राक्षस देकर भेजा था। इस प्रकार दण्डकारण्य उसके लिए राक्षसों से सुरक्षित हो गया।

यक्ष राजा सुकेतु ने ब्रहम का ध्यान कर एक अपूर्व सुंदरी पुत्री प्राप्त की, जिसका नाम ताड़का हुआ। ताड़का का विवाह यक्षिणी जम्भ के पुत्र सुन्द यक्ष से हुई। ताड़का और जम्भ से दो पुत्र हुए - 1. सुबाहु और 2. मारिच। यक्ष और जम्भ द्वारा अगस्त मुनी के छोटे कद का उपहास किया गया था। इसीलिए अगस्त मुनी ने इन्हें मृत्यु का शाप दिया था। अत: सुबाहु और ताड़का ने बदला लेने का प्रयास किया था। अगस्त मुनी ने इन्हें बदसूरत राक्षसी जीव में परिवर्तित कर दिया। फिर विश्वामित्र के अनुरोध पर राम और लक्ष्मण ने इनका वध कर डाला। उधर सुन्द को ऋषि अगस्त ने मार डाला था। दरअसल, ताड़का ने रावण से भारत में राक्षस राज रावण का राक्षस धर्म का

प्रचार - प्रसार करने का उद्येश्य बतलाकर रावण से कुछ सैनिक साथ लेकर वह नैमिषारण्य आयी थी जहाँ बाद में राम, लक्ष्मण ने उसका वध किया। यह नैमिषारण्य ही शाहाबाद जिला या आरा जिला या भोजपुक जिला कहलाता है। इसी प्रकार रावण का दूसरा सैनिक - सन्निवेश दण्कारण्य स्थापित हुआ था, जिसे आज नासिक कहते हैं। रावण ने अपने नाना सुमाली को लंका का राज्य की देखभाल करने के लिए लंका सौंप कर भारत के दण्डकारण्य आया था। दण्डकारण्य एक दुर्गम वन था। यहीं इसकी बहन सूर्पनखा रहती थी तथा इसके द्वारा भेजा हुआ खर, दूषण भी यहीं रहता था। कुबेर द्वारा निष्काषित प्रबल पराक्रमी तुम्बुरू गंधर्व भी यहीं रहता था और ऋषि-मुनियों के यज्ञ में व्यवधान डालता, मारता रहता था। इस वन में उपनिवेश बनाकर कुछ ऋषि रहते थे जैसे - शरभंग, सुतीक्ष्ण, माणडकर्ण एवं अगस्त्य ऋषि आदि। इस ऋषियों में माण्डकर्ण तो राजसी प्रकृति के थे परन्तु अगस्त्य ऋषि सबसे अधिक महिमावान एवं प्रतापी ऋषि थे। उन्होंने अनेक राक्षसों को वीरतापूर्वक वध किया था। इनमें वातापि और इल्वल प्रमुख थे।

रावण इस वन के सुषमा, सौद्रय और प्रकृति से मोहित था और छद्म वेष धर कर ऋषि-मुनियों के उपनिवेश में खोज-खबर लेते हुए घुमता रहता था। इस प्रकार वह आर्यावर्त के बारे में बहुत ज्ञान प्राप्त कर लिया था। दण्डाकारण्य के दक्षिण भाग में वैजयंतीपुरी था जहाँ का स्वामी रावण का साढ़ू कुलीतरवंशी विमिध्वज शम्बर था एवं उसकी पत्नी का नाम मायावती था। रावण वैजयंतीपुरी जाकर मायावती के साथ संबंध स्थापित कर लिया। परन्तु, इस बात का पता लगते ही विमिध्वज शम्बर ने रावण को सजा देते हुए उसे अन्धकूप में डाल दिया। उसी समय शम्बर के विरूद्ध पांचालपति दिवोदास और महाकोशल के राजा दशरथ की संयुक्त सेना ने आक्रमण कर दिया। अतः मायावती की खबर लिए बगैर शम्बर उस युद्ध में व्यस्त हो गया और अंत में दशरथ तो घायल हो गया जिसमें कैकेई ने उसे बचाकर पीछे ले गयी तथा पाँचालपति दिवोदास ने शम्बर का सिर काट गिराया। इस बात की खबर मायावति को मिली और मायावति ने रावण को अंधकूप से स्वतंत्र कर दी परन्तु स्वयं अपने पति शम्बर के साथ सहगमन कर गई। चिता में पति के शरीर को अपने गोद में लेकर जल गई।

रावण वैजयंतीपुरी छोड़कर चलता-भटकता गन्धर्व नगरी पहुँच गया। आजकलल जहाँ पेशावर और डेरगाजी खाँ का प्रदेश है वहाँ यही प्रदेश था। अत्यन्त रमणीय और सुंदर स्थल था। गन्धर्वों के राजा मित्रावसु और उसकी पुत्री चित्रांगदा से उसकी भेंट हुई। राजा मित्रावसु ने अपनी पुत्री चित्रांगदा का विवाह रावण के साथ कर दिया।

रावण किष्किंधापुरी के सरोवर तक आ पहुँचा। उसने वहाँ उस सरोवर में स्नान किया और महामुनी मतंग ऋषि के आश्रम में गया जहाँ शबरी रहती थी। उन्होंने रावण का सत्कार किया। इसके बाद उसने किष्किंधा नगरी में प्रवेश किया। वहाँ उसने सागर तट पर वानरराज बालि से मल्लयुद्ध किया। परन्तु, वह हार गया और उसने बालि से मत्रता का हाथ बढ़ाते हुए अग्नि को साक्षी बनाकर बन्धुत्व की स्थापना की।

इस प्रकार रावण का भारत भ्रमण हुआ अर्थात् भारत प्रवेश करने के बाद वह दण्डकारण्य आया, बैजयंतीपुरी गया, गंधर्व नगरी पहुँचा और किष्किंधापुरी होते हुए वापस लंका चला गया।

आभार - आचार्य चतुरसेन कृत प्राचीन युग की पृष्ठभूमि पर आधारित एक महान् मौलिक उपन्यास "वयं रक्षामः।"

================

- माँ -

श्री राजकिशोर प्रसाद,
वरि. लिपिक/बिजली/निर्माण

माँ मैं तेरा बच्चा हूँ, घुटनों से मैं रेंगते-रेंगते,
कब मैं पैरों पर खड़ा हुआ, तेरी ममता की छाँव में,
जाने कब मैं बड़ा हुआ, काला टीका, दूध मलाई,
आज भी सब कुछ वैसा है, मैं ही मैं हूँ, हर जगह,
प्यार ये तेरा कैसा है, सीधा-सादा, भोला-भाला,
मैं ही सबसे अच्छा हूँ, कितना भी हो, तेरा बच्चा हूँ,
तब तक सब अच्छा था, आज मैं जब बड़ा हुआ,
यदि कर-कर के मन में मैं, हर पल तुझे याद किया माँ,
मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ, जब तुम मुझे, छोड़ कर चली गई,
तब तेरी कीमत का अहसास हुआ, माँ मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ।

==========

रेलवे सुरंगों का संक्षिप्त विवरण

- श्री मानस रंजन महापात्रा, सीनि.से.इंजी./निर्माण

संरचनाओं की डिजाइन

पुल टनेल (सुरंग) बिल्डिंग स्टील स्ट्रक्चर (संरचना)

चालू रेल परियोजनाएं जहां टनेल का कार्य प्रगति पर है:

- जिरिबाम – तुपुल – इंफाल नई लाइन परियोजना।
- भैरबी – सैरंग नई लाइन परियोजना।
- गौरीपुर– अभयापुरी नई लाइन परियोजना।
- डिमापुर – कोहिमा नई लाइन परियोजना।
- सेवोक - रंगपो नई लाइन परियोजना

सुरंग की परिभाषा - सुरंग एक पहाड़ी या इमारत,सड़क या नदी के नीचे बनाया गया कृत्रिम भूमिगत मार्ग है।

टनेल बनाने की विधि या मेथड क्या है?

कुछ कारणों को यदि मानकर चलें तो टनेल (सुरंग) बनाने की विधि को दो भागों में बांट सकते हैं:-

(1) ड्रिल और ब्लास्ट (2) मेकानिकल (यांत्रिक) खुदाई

ड्रिल और ब्लास्ट मेथड तीन फिलोसोफी पर आधारित है-

(क) एन.ए.टी.एम. (ख) एनएमटी और (ग) एडेकोआरएस

मेकानिकल (यांत्रिक) खुदाई विधि दो भागों में बंटा है-

(क) पार्शियल (आंशिक) फेस और

(ख) फुल (पूरा) फेस।

पार्शियल फेस में - रोडहीडर, हैमर, खुदाई करने वाला एक्सकावेटर है।

फुल फेस में टीबीएम और ईवीएम है।

टनेल बनाने में किसी मेथड (विधि) को सेलेक्ट करने के पहले अलग-अलग कारक मानकर चलना चाहिए:-

टनेल डाइमेंशन (आयाम)

टनेल जियोमेट्री (ज्यमिति)

टनेल की लंबाई

रॉक (चट्टान) का कंडीशन (स्थिति)

ग्राउंड (भूमिगत) वाटर लेवल (जल स्तर) एवं एक्सपेक्टेड (अपेक्षित) वाटर इनफ्लो (जल का अंदर प्रवाह)

- एन.ए.टी.एम. - नैटम में लोड (भार) के समय रॉक मासेस अर्थात चट्टानों पर क्या प्रतिक्रिया होती है और कंस्ट्रक्शन करते समय अंडरग्राउंड (भूमिगत) कंस्ट्रक्शन (निर्माण) के परफॉर्मेंस को मॉनिटर करना होता है।
- जमीनी हालात को देखते हुए अनुकूल सपोर्ट देकर एन.ए.टी.एम. को प्रोग्रेस किया जाता है इसको अक्सर डिजाइन ऐज यू गो एप्रोज कहा जाता है।
- चट्टान की मौजूदा अवस्था की लाइनिंग और मैपिंग में कन्वर्जेंस और डाइवर्जेंस को देखते हुए और अधिक ठीक ढंग से इस डिजाइन ऐज यू मॉनिटर ऐप्रोज के रूप में वर्णन किया जा सकता है।

➢ रेल परियोजनाओं में एन.ए.टी.एम. को अपनाने के कारण क्या-क्या हैं?

विभिन्न आकार तथा बड़े क्रॉस सेक्शन की खुदाई को अपनाने में फ्लेक्सिबल (लचीला) है।
आवश्यकतानुसार एडिशनल (अतिरिक्त) सपोर्ट (आलंबन) लगाने में कोई दिक्कत नहीं होती है। जैसे-रॉक बोल्ट, डॉवेल (गिट्टी), स्टील रीब आदि।.

(1) प्राइमरी (प्राथमिक) सपोर्ट (आलंबन) लगाने में आसान होता है। जैसे शोटक्रिट।

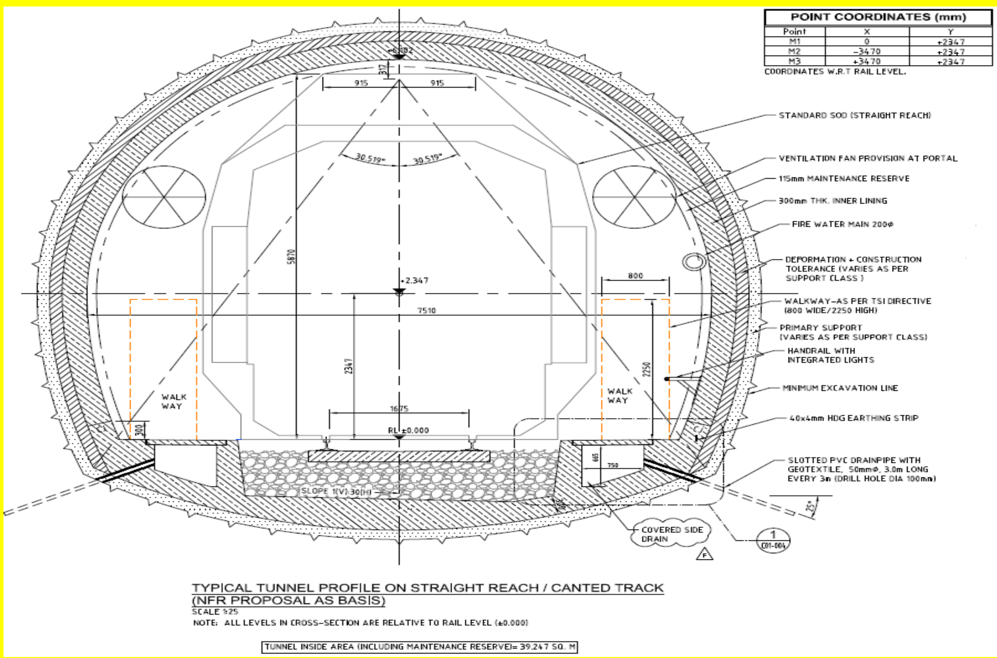

TYPICAL TUNNEL PROFILE ON STRAIGHT REACH / CANTED TRACK
(NFR PROPOSAL AS BASIS)
SCALE 1:25
NOTE: ALL LEVELS IN CROSS-SECTION ARE RELATIVE TO RAIL LEVEL (±0.000)

सपोर्ट (आलंबन) के विभिन्न वर्ग या श्रेणी होते हैं

सपोर्ट आलंबन के वर्गभूमि के विभिन्न प्रकार के आधार पर विभिन्न नमूनों के रूप में सपोर्ट (आलंबन) की श्रेणी होती है जैसे एससी-1, एससी-2, एससी-3, एससी-4, एससी 5, एससी 6, एससी 7.

ऐसी अपेक्षा की जाती है कि सिंगल ट्रैक क्रॉस सेक्शन के टनेलों के निर्माण के दौरान सभी संभावित परिस्थितियों से सामना करने में यह डिजाइन सक्षम होगा।

यदि वास्तविक तौर पर भूमि की खुदाई के समय किसी प्रकार के बदलाव दिखाई देते हैं तो सपोर्ट (आलंबन) की नई श्रेणी (वर्ग) परिभाषित किया जाएगा।

फोरपोलिंग

सेल्फ ड्रिलिंग रॉक बोल्ट

वायर मेश (150x150x6एमएम)

लैटिस गर्डर/स्टील आरआईबी

फेस बोल्ट (आवश्यकता के अनुसार)

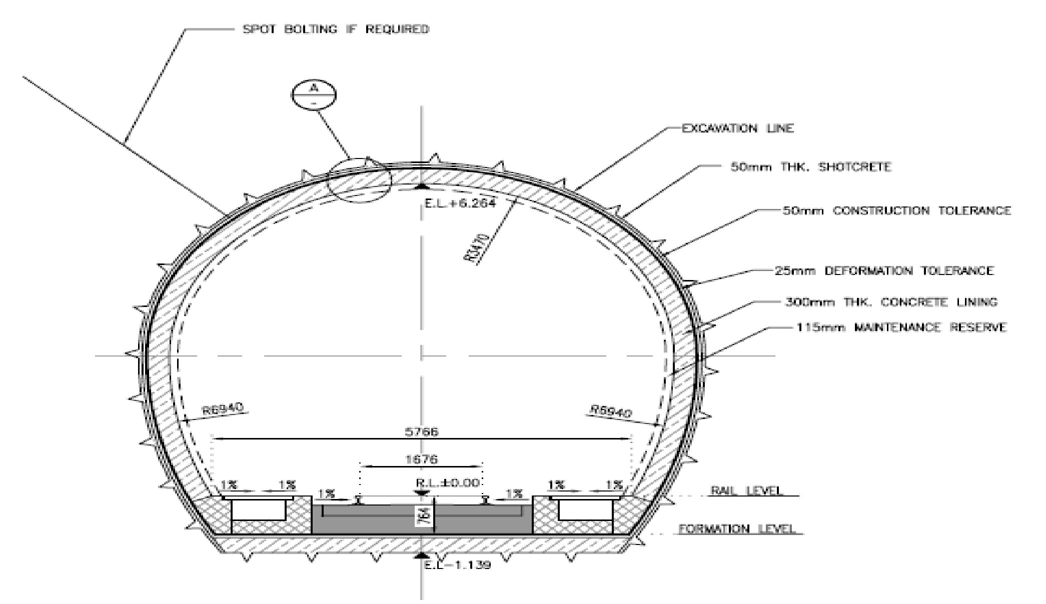

ROCK CLASS-I
SCALE(A1) 1:50

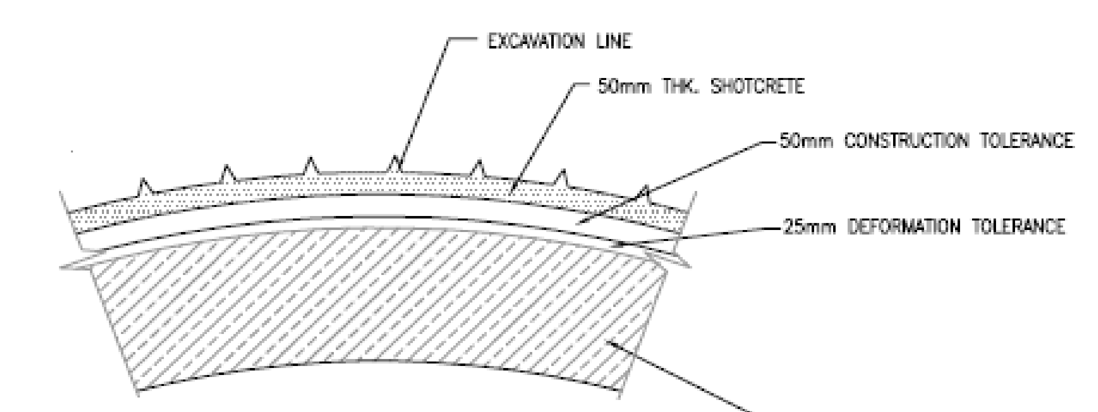

DETAIL-A
SCALE(A1) 1:10

एन.ए.टी.एम. की विधि का सारांश

खुदाई के क्षेत्र की शॉटक्रिटिंग (प्राइमरी लाइनिंग) टनेल के आगे वाले भाग के समानांतर वायरमेश लगाना। टनेल के आगे वाले भाग के समानांतर लैटिस गर्डर खड़ा करना।

विशेष प्रकार का रॉक बोल्टिंग

अंतिम लाइनिंग

एन.ए.टी.एम. के अनुसार

खुदाई का क्रम

रॉक बोल्ट का इंस्टॉलेशन

लैटिस गर्डर का इंस्टॉलेशन

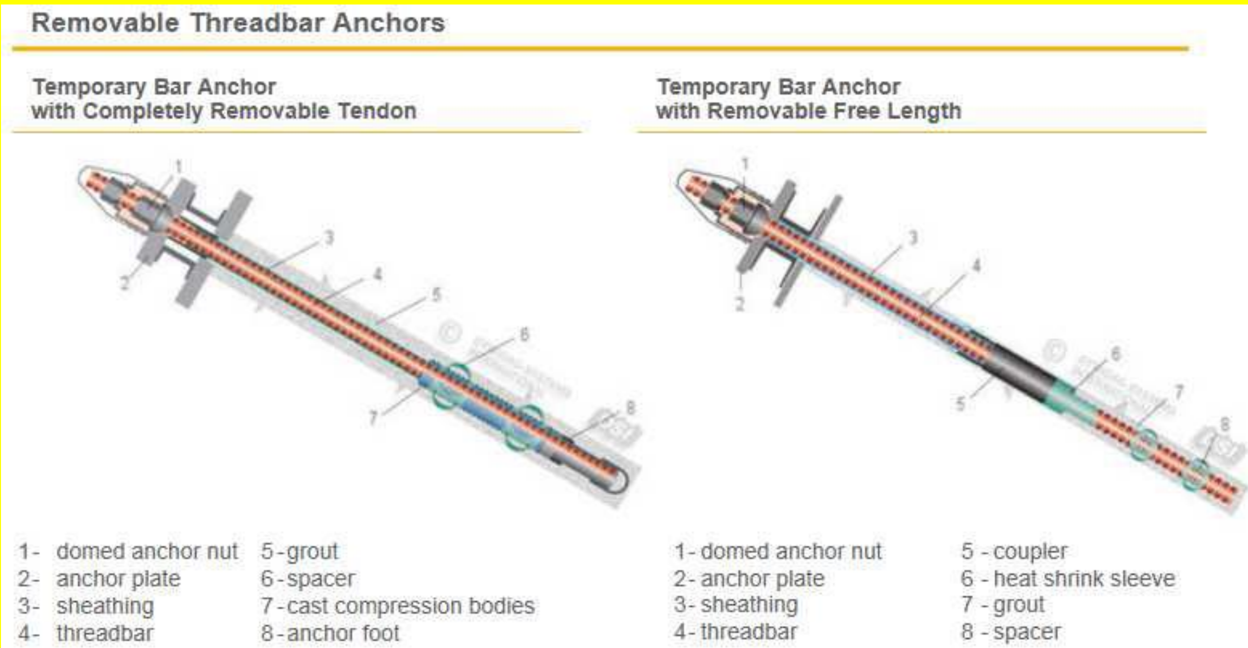

आई.एस.एम.बी. का इंस्टॉलेशन

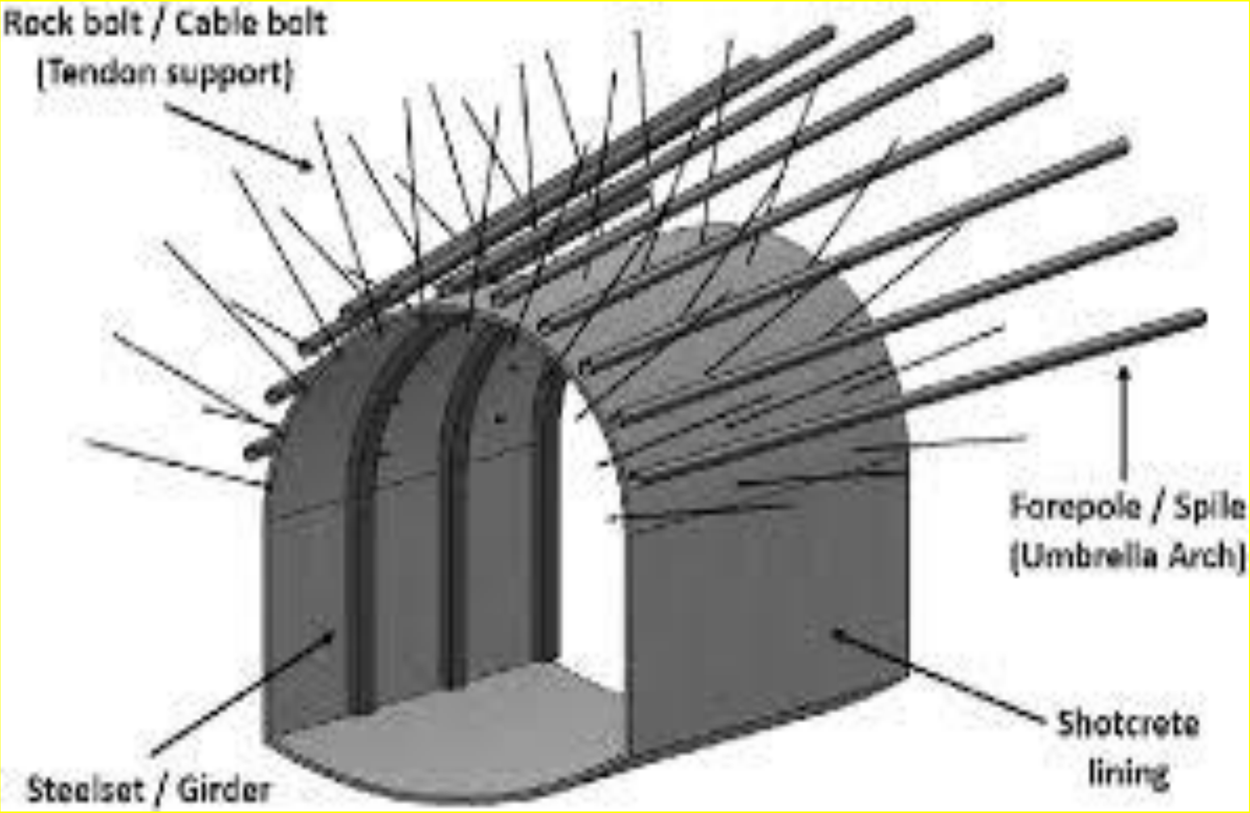

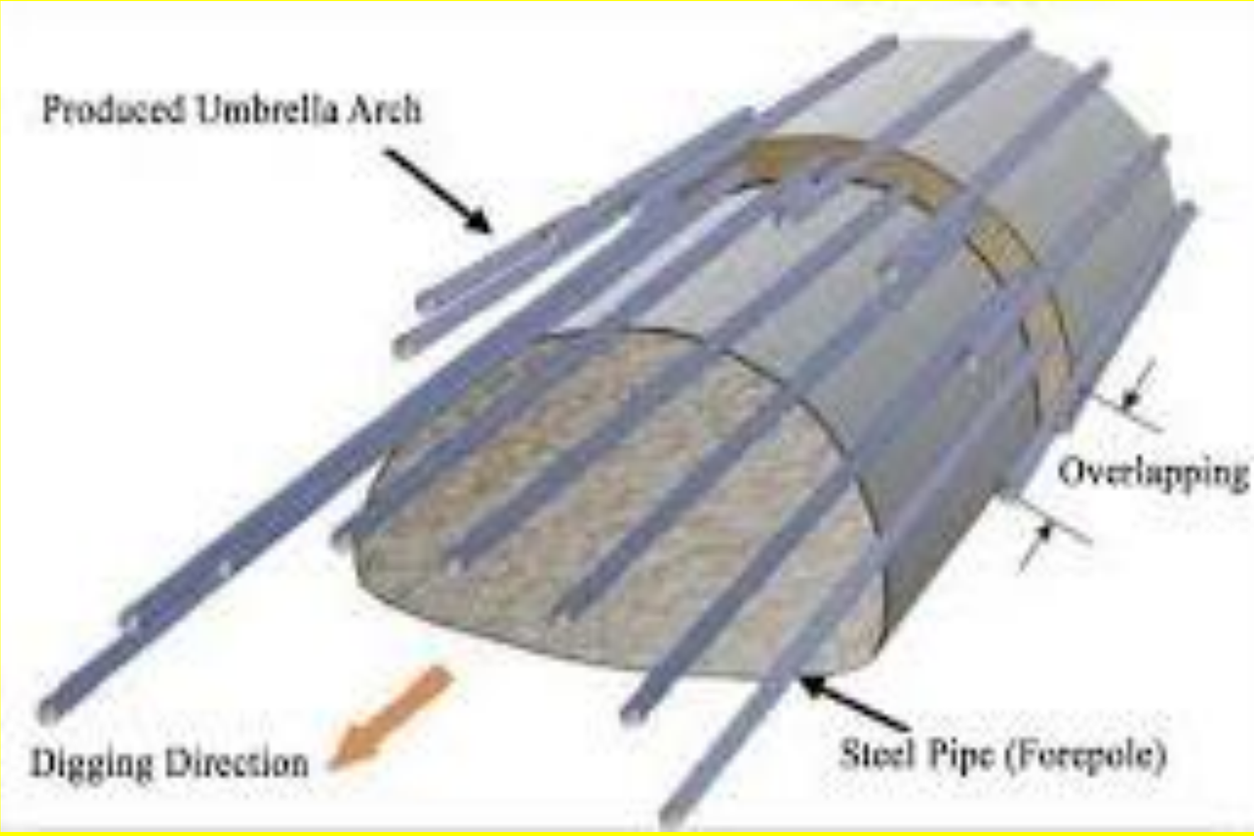

- सावधान! हर जगह साइबर ट्रैप -

- फ्लाइंग ऑफिसर शिवम् कुमार,
सुपुत्र श्री राजेश रंजन कुमार, राधि/निर्माण

21वीं सदी में सब कुछ आधुनिक और डिजिटल हो गया है। कंप्यूटर ने हमारे जीवन में एक अनिवार्य स्थान बना लिया है। इससे आंकड़ों का रिकॉर्ड रखना और विशाल रिकॉर्ड-बेस से शोध करना आसान हो गया है। हमने अपनी व्यक्तिगत जानकारी को ऑनलाइन स्टोर करना शुरू कर दिया है, जिसमें हमारे फोटो और वीडियो और यहां तक कि हमारे पैसे और सभी बैंक लेनदेन से संबंधित जानकारी हमारे बैंकों में कुछ कंप्यूटर हार्डड्राइव में संग्रहित है। इसका लाभ यह है कि यह हमारे जीवन को आसान बनाता है। हमें लेन-देन करने के लिए घंटों कतार में खड़े होने की जरूरत नहीं है। हालांकि, यह एक सवाल भी खड़ा करता है - हमारा डाटा कितना सुरक्षित है ? या दुर्भावनापूर्ण इरादे वाले व्यक्तियों के लिए इसे पढ़ना या संशोधित करना कितना आसान या कठिन है?

अगर हम अपने डेटा की सुरक्षा के बारे में बात करते हैं - कम से कम हमारे बैंकिंग डेटा - तो कहना सही होगा कि यह बेहद सुरक्षित है। उन्हें क्रैक करना बहुत मुश्किल है। इस बात की बहुत कम संभावना है कि कोई भी हमारे सोशल मीडिया या ई-मेल सर्वर या हमारे बैंक के सर्वर को हैक करने और हमारे कीमती डेटा को बदलने या हटाने में सक्षम होगा। यह विशेषता अभेद्य एन्क्रिप्शन एल्गोरिदम के द्वारा सुनिश्चित की जाती है। सरल शब्दों में एन्क्रिप्शन और सामान्य रूप से क्रिप्टोग्राफी एक गणितीय क्षेत्र है जो हमारे डेटा को उस पर लॉक लगाकर सुरक्षित करने से संबंधित है। लॉक(ताला) तोड़ना लगभग असंभव है। केवल अधिकृत "की"(कुंजी) ही ताला खोल सकती है और केवल हमारे पास ही हमारे डेटा के लॉक की कुंजी है। कुंजी हमारी ओर से ऑथेंटिकेशन(प्रमाणीकरण) के रूप में है - उदाहरण के लिए- पासवर्ड एक प्रकार की कुंजी है जिसे किसी व्यक्ति को याद रखना होता है और इसे किसी के साथ साझा नहीं करना चाहिए ताकि केवल वही व्यक्ति अपना डेटा अनलॉक कर सके। प्रमाणीकरण तकनीक या कुंजी का एक अन्य उदाहरण आपके फोन नंबर पर एसएमएस के रूप में आयी ओटीपी है। इसलिए ओटीपी भी शेयर न करें। फ़िंगरप्रिंट भी कुंजी के रूप में एक प्रमाणीकरण तकनीक है, क्योंकि पूरी दुनिया में प्रत्येक व्यक्ति का "फ़िंगरप्रिंट" अद्वितीय होता है।

तो, हमने देखा है, कि डेटा पर लॉक(ताला) है और एक कुंजी है जो केवल अधिकृत व्यक्ति के पास है। ताला तोड़ना असंभव है। इसलिए, डेटा चोरी करने का एकमात्र तरीका कुंजी अर्थात् पासवर्ड, ओटीपी, आदि की चोरी करना या फ़िंगरप्रिंट की फ़ोर्जिंग करना है। इसलिए, कभी भी अपना पासवर्ड और ओटीपी किसी को भी साझा न करें। अब, चूंकि लॉक (ताला) तोड़ना लगभग असंभव है इसलिए सभी दुर्भावनापूर्ण व्यक्ति विभिन्न तकनीकों का उपयोग करके आपकी कुंजी चुराना चाहते हैं। हम जानते हैं कि कुंजियों को संभालना इंसानों की जिम्मेदारी है, इसलिए साइबर अपराधी अलग-अलग तकनीकों का इस्तेमाल करके इंसानों पर हमला करते हैं।

मनुष्य को सोशल इंजीनियरिंग नामक तकनीक द्वारा लक्ष्य बनाया जाता है। यह मौखिक रूप से या कॉल से या एसएमएस या ई-मेल के माध्यम से मनुष्यों को उनकी बहुमूल्य कुंजियां जैसे- पासवर्ड, व्यक्तिगत विवरण, एटीएम का पिन, ओटीपी आदि देने के लिए मूर्ख बनाने की एक विधि है। "विशिंग" एक ऐसी तकनीक है जिसमें जालसाज एक मानव लक्ष्य को बैंक अधिकारी के रूप में कॉल करता है तथा लक्ष्य का विश्वास हासिल करके या दबाव डालकर मूल्यवान कुंजियां निकालने की कोशिश करता है। "फ़िशिंग" भी मूर्ख बनाने की एक तकनीक है जिसमें इंटरनेट या ई-मेल के द्वारा लक्ष्य को यह विश्वास दिलाया जाता है कि उसने एक बड़ी धनराशि या गाड़ी इत्यादि जीत ली है और इसी बहाने लक्ष्य से उसकी संवेदनशील जानकारी निकाली जाती है। जालसाज लक्ष्य को विश्वास हासिल कराने के लिए झूठी कहानियाँ बनाते हैं - जैसे कि वह आपका कोई दोस्त या संबंधी बनकर आपको एसएमएस या ई-मेल करते हैं और आपसे आर्थिक रूप से कोई आपातकालिक मदद मांग लेते हैं ताकि आप उन जालसाजों के खाते में पैसे ट्रांसफर कर दें, यह सोचकर कि वह आपका दोस्त या संबंधी है।

संक्षेप में, अब जब हम ऐसे साइबर ट्रैप से अवगत हैं जो हमारी कुंजियाँ या पैसे चुराने के लिए हमें मूर्ख बनाने की कोशिश करते हैं, तो हमें कभी भी ऐसे किसी भी फोन कॉल या संदेश को भाव या महत्व नहीं देना चाहिए और कभी भी किसी भी स्रोत को संवेदनशील जानकारी का खुलासा नहीं करना चाहिए। साथ ही, हमें कभी भी किसी की पहचान जाने बिना उसे ऑनलाइन पैसे ट्रांसफर नहीं करना चाहिए। सावधान रहें और सुरक्षित रहें - टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल विवेकपूर्ण तरीके से करें।

- राजभाषा पुरस्कार से संबंधित कुछ और जानकारी -

हिंदी शिक्षण योजना की हिंदी भाषा परीक्षा -

क्र.सं.	पाठ्यक्रम	उत्तीर्ण प्रतिशत अंक	नकद पुरस्कार राशि	एकमुश्त पुरस्कार राशि
1.	प्रबोध	70% से अधिक (प्रथम)	1600.00 रू.	-
		60%-70% (द्वितीय)	800.00 रू.	1600.00 रू.
		55%-60% (तृतीय)	400.00 रू.	-
2.	प्रवीण	70% से अधिक (प्रथम)	1800.00 रू.	-
		60%-70% (द्वितीय)	1200.00 रू.	1500.00 रू.
		55%-60% (तृतीय)	600.00 रू.	-
3.	प्राज्ञ	70% से अधिक (प्रथम)	2400.00 रू.	-
		60%-70% (द्वितीय)	1600.00 रू.	2400.00 रू.
		55%-60% (तृतीय)	800.00 रू.	-
4.	पारंगत	70% से अधिक (प्रथम)	10,000.00 रू.	-
		60%-70% (द्वितीय)	7000.00 रू.	-
		55%-60% (तृतीय)	4000.00 रू.	-
5.	हिंदी टंकक	97% से अधिक (प्रथम)	2400.00 रू.	-
		95% - 97% (द्वितीय)	1600.00 रू.	1600.00 रू.
		90% - 95% (तृतीय)	800.00रू.	-
6.	हिंदी आशुलिपि	95% से अधिक (प्रथम)	2400.00 रू.	-
		92% - 95% (द्वितीय)	1600.00 रू.	3000.00 रू.
		88% - 92% (तृतीय)	800.00 रू.	-

अंग्रेजी से भिन्न भाषाओं के शब्द और उनके हिंदी पर्याय

Ab initio	प्रारंभ से	Ex gratia	अनुग्रहपूर्वक
Ad hoc	तदर्थ	Fait accompli	संपन्न कार्य
Ad interim	अंतरिम	Id est (ie)	अर्थात्, यानी
Bonafide	वास्तविक	Locus standi	सुने जाने का अधिकार
Bonafides	सद्भाव	Modus operandi	कार्यप्रणाली
Corrigendum	शुद्धि पत्र	Mutatis Mutandis	यथोचित परिवर्तनों सहित
De facto	वस्तुत:	Per bearer	पत्रवाहक द्वारा
De jure	विधित:	Sine die	अनिश्चित काल के लिए
Dies non	अकार्य दिन	Sub judice	विचाराधीन
En masse	सामूहिक रूप में	Vis-à-vis	आमने-सामने
En route	रास्ते में	Viva-voce	मौखिक परीक्षा